# ज्ञानामृत

अगस्त, 1982
वर्ष 18 ❋ अंक 2

मूल्य 1.25

१:नि:शस्त्रीकरण शान्ति सम्मेलन में ब्र० कु० निर्वैर जी ने भाग लिया। यू० एन० ओ० के सेक्रेट्री जनरल उनका स्वागत करते हुए।

२:महबुब नगर (आ० प्र०) में ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि प्रशासिका ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय राजयोग केन्द्र के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधन करते हुए।

गुजरात राज्य के पंचायत मंत्री परिवार सहित पाण्डव भवन माऊंट आबू में पधारे। ब्र.कु. प्रकाशमणि जी पूरे परिवार को शिवपिता परमात्मा का सन्देश सुना रही हैं। साथ में ब्र.कु.सरला तथा मोहिनी जी बैठी हैं। सामने ब्र.कु.जगदीश जी हैं।

श्रीनगर गढ़वाल में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए आता हेमवती नन्दन बहुगुणा जी। साथ में देहरादून सेवा केन्द्र के भाई-बहनें खड़े हैं।

गुजरात राज्य से आए प्राध्यापकों का एक ग्रुप पाण्डव भवन माऊंट आबू में ब्र० कु० मोहिनी तथा ब्र० कु० सरला बहन के साथ।

काठमान्डो मे हुए विश्व हिन्दू सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप मे भाग लेती हुई ब्र० कु० सीता जी।

विजयवाड़ा में "विश्व शान्ति महोत्सव" के समाप्ति समारोह में ब्र० कु० सुधाकर सम्बोधन करते हुए। मंच पर ब्र० कु० सीता जी, भ्राता विनायक भूषण जी तथा ब्र० कु० सविता जी।

कांकरोली में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री भ्राता शम्भूलाल, ब्र.कु.शील बहन, ब्र.कु.कुन्ती बहन तथा अन्य भाई-बहनें शिवध्वजारोहण के बाद शिवबाबा की याद में।

Regd. No. D. (E)—70

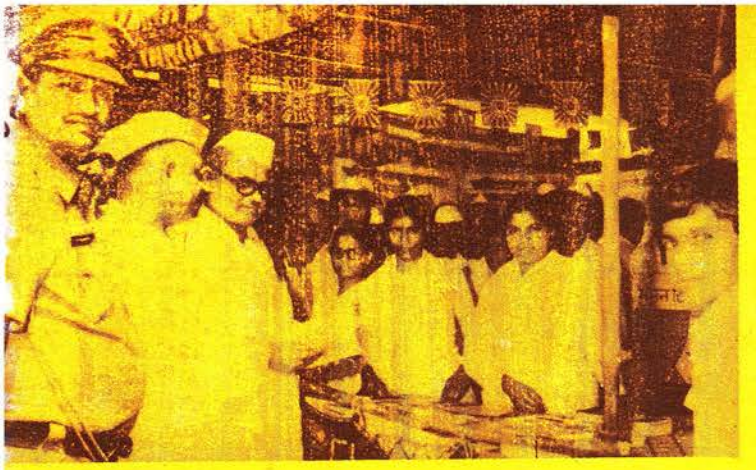

आषाढ़ महायात्रा में पंढरपुर महातीर्थ स्थान में आयोजित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी के चित्रों का अवलोकन करने के पश्चात् भ्राता माणिक राव, महाराष्ट्र के सिंचाई मन्त्री राजयोग पर पुस्तक देखते हुए, ब्र० कु० प्रेमिका, महानन्दा, कस्तूरी तथा अन्य भाई बहनें साथ में हैं।

काठमान्डों के याक एण्ड यती होटल में यूनिवर्सल सनातन धर्म फाऊंडेशन की सभा में भाषण करने के पश्चात् (बाएं से) ब्र० कु० शीला, भ्राता रूप लाल बतरा जी, मीनाक्षी बहन, भ्राता डा० कंवर खुराना जी, वकील बहन जनक राज्य लक्ष्मी देवी शाह जी तथा सैक्रेटी जी खड़े हैं।

अहमदाबाद "विश्व शान्ति सम्मेलन" में मंच पर विराजमान हैं भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री मोरार जी देसाई जी, ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा जी, ब्र० कु० सरला जी, न्यायाधीश ए० एन० सुरता, पुरुषोत्तम भाई मावलंकर, ब्र० कु० रमेश जी तथा अन्य।

उदयपुर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित "औद्योगिक शान्ति प्रदर्शनी" का उद्घाटन जे० के० टायर फैक्ट्री के जनरल मैनेजर सेठ जी करते हुए, निकट ही ब्र० कु० शीला, लक्ष्मी, सरोज जी हैं।

## अमृत-सूची


| क्र० संख्या | विषय | पृष्ठ | क्र० संख्या | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|---|
| १. | पवित्रता की प्रतीक—राखी | १ | १७. | श्रीकृष्ण फिर कब आयेंगे ? | २३ |
| २. | ज्ञान-मंथन (सम्पादकीय) | २ | १८. | रक्षा-बन्धन पवित्रता और प्रेम का प्रतीक | २४ |
| ३. | स्नेह, एकता, विश्वास और सम्मान का आपस में कंगन बाँध संगठन को शक्तिशाली और एकमत बनाओ | ६ | १९. | पाँच शत्रुओं को मित्र बनाओ | २५ |
| ४. | आई है पावन राखी (कविता) | ७ | २०. | मेरा अलौकिक अनुभव | २८ |
| ५. | ब्राह्मण जीवन में पवित्रता का महत्त्व | ८ | २१. | नीरा की मनोदशा (नाटक) | २९ |
| ६. | अब न गलेगी तुम्हारी दाल (कविता) | ९ | २२. | राखी का संदेश (कविता) | ३१ |
| ७. | रक्षा-बन्धन | १० | २३. | यू० एन० ओ० में ब्रह्माकुमार निर्वैट जी का स्वागत | ३२ |
| ८. | माया आई तो क्या हुआ ? (कविता) | १२ | २४. | समस्त उलझनों का हल | ३२ |
| ९. | क्या यह रामराज्य स्थापन हुआ है ? | १३ | २५. | प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर संदेश | ३३ |
| १०. | गीत | १४ | २६. | सचित्र सेवा समाचार | ३५ |
| ११. | विचारों का प्रभाव | १५ | २७. | अनमोल बातें | ३६ |
| १२. | ये अद्भुत आलौकिक संस्थान | १७ | २८. | रक्षा-बन्धन पर्व पवित्रा की प्रतिज्ञा का सूचक | ३७ |
| १३. | सचित्र सेवा समाचार | १८ | २९. | जालन्धर में नव विश्व आध्यात्मिक मेला | ३८ |
| १४. | प्रस्ताव प्रतियोगिता परिणाम | १९ | ३०. | आध्यात्मिक सेवा समाचार | ३९ |
| १५. | सहजयोगी और सहज जीवन | २० | | | |
| १६. | भ्रमित विचार और निश्चित विनाश | २२ | | | |


# पवित्रता की प्रतीक—राखी

रक्षा बन्धन के त्यौहार की यह एक विशेषता है कि इस महोत्सव के अवसर पर ब्राह्मण भी रक्षा-बन्धन बाँधता है और बहन भी अपने भाइयों को राखी बाँधती हैं। इस प्रकार इस त्यौहार में बहन को ब्राह्मण से समानता दी गयी है।

अब यह तो सभी जानते ही हैं कि ब्राह्मण सनातन धर्म का प्रतिनिधि है। वह धार्मिक ही कार्य अथवा आयोजन करता है। अतः बहन द्वारा भाइयों को राखी बाँधने की रस्म भी प्रारम्भ में कोई धार्मिक ही प्रयोजन लिए हुए होगी। पुनश्च, 'धर्म' शब्द का अर्थ 'धारणा' है; 'धर्म' पवित्रता को धारण करने के ही विधि-विधान को कहते हैं। अतः बहन द्वारा भाई को राखी बाँधने की रस्म आदि काल में पवित्रता धारण करने की सूचक रही होगी। इसलिए उक्ति भी है—कन्या सौ ब्राह्मणों से भी उत्तम है।"

परन्तु चूंकि समयान्तर में वर्ण व्यवस्था प्रचलित हो गई और 'ब्राह्मण' एक जाति बन गयी, इसलिए ये रस्म ब्राह्मणों और बहनों दोनों द्वारा की जाने लगी वरना संगमयुग में, जब परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कन्याओं-माताओं को ज्ञान-कलश दिया और उन्हें सही अर्थ में 'ब्राह्मण' जीवन दिया तब उन्होंने ही नर-नारियों को राखी बाँध कर उनसे पवित्रता का व्रत पालन कराया और उस पवित्रता द्वारा सतयुगी पावन सृष्टि की पुनः स्थापना हुई। अब पुनः इस पुरुषोत्तम संगम युग में पवित्रता का व्रत पालन करने वाली ब्रह्माकुमारी बहनें नर-नारी को यह राखी बाँधकर पवित्र एवं राजयोगी बनने की प्रबल प्रेरणा दे रही हैं।

सम्पादकीय

# ज्ञान-मंथन

सभी अध्यात्मवादी इस बात को मानते हैं कि ज्ञान का श्रवण करने के बाद उसका मनन अथवा मंथन आवश्यक है। मन्थन की उपमा को स्पष्ट रूप से समझने के लिए, हमें दही बिलोने के लिए जो उपकरण प्रयुक्त होते हैं, उनको सामने रख लेना चाहिए। बिलोने की क्रिया में एक तो बिलोने के लिए कोई मटका या मटके-जैसा कोई ऐसा बरतन चाहिए जिसमें मथनी के हिलने के लिए पर्याप्त जगह भी हो और साथ-साथ उसके ऊपर का भाग सहज रूप से ढका भी जा सके ताकि मथने की प्रक्रिया होने पर दही छलक कर बाहर न चला जाए। इसके अतिरिक्त स्वयं मथनी की भी आवश्यकता है जिसके नीचे का विशेष भाग दही को उथल-पुथल में ला सके और जिसके ऊपर का भाग रस्सी बाँधने के लिए अनुकूल हो। इस प्रक्रिया में रस्सी तो चाहिए ही क्योंकि उसके बिना तो मथना सम्भव ही नहीं है, क्योंकि रस्सी नहीं होगी तो मथनी यथा-वान्छित हिलेगी ही नहीं और जब वह हिलेगी ही नहीं तो दही बिलोई कैसे जाएगी और जब बिलोई ही नहीं जाएगी तो मक्खन ही कैसे निकलेगा और यदि मक्खन ही नहीं निकलेगा तो मथने का संकल्प ही व्यर्थ है।

फिर जब बिलोने की क्रिया होती है तो थोड़े-थोड़े समय के बाद उसमें ठंडा पानी भी तो डाला जाता है ताकि मक्खन के बिखरे हुए कण एकत्रित होते जायें अथवा जो चिकनाई पहले द्रवीभूत थी, वह घनीभूत होती जाये। अतः मथने की देशीय अथवा ग्रामीण पद्धति में मथने वाली मैया थोड़ी-थोड़ी अवधि के बाद ढकना उठाकर उसे एकत्रित होने में सहयोग देती है और अन्त में ठण्डा पानी या बर्फ डालकर वह उसे बटोर लेती है। जब वह बाहर पिण्डी अथवा पहाड़ी के रूप में सजाया जाता है तब उस परिश्रम के फल-स्वरूप जो-कुछ हमारे सामने होता है, उसे कहते हैं— नवनीत। वह मनुष्य को हृष्ट-पुष्ट और बलवान बनाने में सक्षम होता है।

वास्तव में मथने की क्रिया एक बहुत महत्वपूर्ण क्रिया तो है ही परन्तु साथ-साथ वह कितनी मनो-रंजक भी है। मथने के समय मटके में दही अथवा लस्सी जो ध्वनि पैदा करती है, प्रातःकाल के एकान्त समय में वह ध्वनि कितनी संगीतात्मक होती है! साथ में जो घुँघरू बंधे होते हैं, वह भी उस संगीत को अपनी छटा देकर संगीत के सारे साज़ों की कमी पूरी कर देते हैं। देखिए न, इसकी अलौकिकता के कारण ही तो कवियों और कलाकारों ने श्री कृष्ण को बाल रूप में अपने नन्हें व कोमल पाँवों में नुपूर बाँधे हुए नाच नाचते हुए दिखाया है।

परन्तु हमारी बात तो यहाँ से शुरू हुई थी कि ज्ञान को मंथन से उपमा क्यों दी गई है और ज्ञान मंथन कैसे किया जाए? इसी भाव को सामने रखकर ही हमने मथने के सभी उपकरणों का वर्णन किया है। इसी के समानान्तर ही हमें ज्ञान-मंथन के लिए भी उपकरण चाहिए। बुद्धि रूपी मटका तो सभी के पास है ही। 'गम्भीरता' ही इसका ढकना है। जब तक मनुष्य गम्भीर न हो तब तक उसमें ऊपरी-ऊपरी ज्ञान छलकता है और उसमें मथने की क्रिया सहज रूप से नहीं हो सकती। ज्ञान-मंथन की प्रक्रिया में 'निश्चय' ही इस मथनी का डंडा अथवा मेरु-दण्ड है। निश्चय ही न हो तो मंथन की बात ही नहीं। इस दण्ड के नीचे का भाग, जो ही मंथन की क्रिया में विशेष सक्रिय होता है, वह तीन या चार दन्दानों से बना होता है, उसी के कारण ही तो उस डण्डे को 'मथनी' कहते हैं और सारी क्रिया का नाम भी मथन है। ज्ञान-मंथन के पुरुषार्थ में निम्नलिखित चार प्रश्न इस सूक्ष्म मथनी के दन्दाने हैं—

१. ज्ञान के इस सिद्धान्त अथवा इस मान्यता के क्या गुण हैं अर्थात् यह कैसे युक्ति-युक्त है?

२. यदि सिद्धान्त को ऐसा न मानकर और किसी तरह भी माना जाए तो उसमें क्या त्रुटि होगी अथवा वह कैसे अयुक्त होगा?

३. इस सिद्धान्त व मान्यता से हमें दिव्य गुणों की धारणा, योगाभ्यास और ईश्वरीय सेवा में क्या सहायता मिलेगी और क्या स्पष्टीकरण प्राप्त होता है?

४. इस मान्यता अथवा सिद्धान्त से विश्व में क्या परिवर्तन आ सकता है, यह कैसे अनेक समस्याओं को हल करता है, अनेक उलझनों को सुलझाता है, सर्व-कल्याणकारी, अत्यन्त चमत्कारी, क्रान्तिकारी अथवा अनमोल है ?

ज्ञान का विस्तार और सार ही दो ऐसे धागे हैं जिनके सहयोग से मथनी की रस्सी बनी है। मथनी की प्रक्रिया में रस्सी का एक सिरा अपनी ओर खींचा जाता है तो दूसरा सिरा हमारे हाथ को ही खींचता हुआ ले जाता है। अतः विस्तार और सार का प्रयोग करते हुए यह सोचना ज़रूरी होता है कि अब हमें क्या करना है और आगे चलकर क्या करना है अथवा इसे स्वयं पर कैसे लागू करना है और दूर-दूर तक इससे कैसे लाभान्वित करना है।

हमारे ज्ञान-मंथन की यह प्रक्रिया हमारे लिए संगीतात्मक होनी चाहिए अर्थात् हमें इसके शान्त होने में नूपर की झन्कार, पायल की झन्कार अथवा ताल-जैसा आनन्द आना चाहिए। यदि ऐसा आनन्द नहीं आता तो यह क्रिया मनोरंजन की बजाय बोझिल और श्रमात्मक हो जाती है। हमें श्री कृष्ण अथवा श्री नारायण की बाल्यावस्था अर्थात् सतोप्रधान अवस्था की प्राप्ति को सामने देखते हुए, इस जगत की मैया के रूप में समस्त विश्व रूपी कुटुम्ब को इस नवनीत से लाभान्वित करने के लिए ही ज्ञान-मंथन करना चाहिए, जभी ज्ञान-मंथन का कार्य श्रेष्ठतापूर्वक होगा।

ज्ञान-मंथन की प्रक्रिया के बीच में हमें शान्ति अथवा आनन्द रूपी शीतल जल द्वारा मंथन से प्राप्त हुए कणों को एकत्रित करते जाना चाहिए। यदि मंथन की क्रिया के बीच में 'आत्मिक शीतलता व गद्-गद् भाव' का प्रयोग नहीं किया जाएगा तो ज्ञान के कण अथवा रत्न बिखर जायेंगे और मथने की क्रिया लम्बी और कम फलदायक सिद्ध होगी।

मक्खन को नवनीत, सार अथवा 'स्नेह' (स्निग्धता) भी कहा जाता है। अतः नव जीवन-दर्शन अथवा नव-नीति की प्राप्ति के लिए अथवा ईश्वरीय स्नेह की पुष्टि के लिए यह ज्ञान-मंथन एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण क्रिया है—ऐसा मानकर ही इस क्रिया को करना चाहिए।

अब हम एक-आध उदाहरण देकर स्पष्ट करेंगे कि मथनी के चार दन्दानों की तरह कैसे चार प्रश्नों का प्रयोग करके मंथन करना चाहिए।

शिव बाबा ने हमें बताया है कि—"मैं सर्वव्यापक नहीं हूँ न ही हरेक आत्मा मेरा रूप है बल्कि मैं ज्योति-स्वरूप, सूक्ष्मातिसूक्ष्म चेतन बिन्दु हूँ व परमधाम का वासी हूँ जो कि धर्म ग्लानि के समय अवतरित होकर सुख-शान्तिमय सतयुगी सृष्टि की पुनः स्थापना करता हूँ।"

अब हम इस पर मंथन करने के लिए पहला प्रश्न लेते हैं। इससे हमारा ज्ञान-मंथन इस प्रकार होगा—"यह बात बहुत ही युक्ति-युक्त है। यदि सभी आत्मायें परमात्मा का रूप होतीं तो चोर और कोतवाल में, कातिल और न्यायाधीश में, पापात्मा और महात्मा में अन्तर ही न होता। (ii) एक ओर आत्मा को परमात्मा का रूप मानना, दूसरी ओर परमात्मा को अलग मान उसे उपास्यदेव मानना अर्थात् उसकी भक्ति, पूजा तथा उससे योग-युक्त होने का अभ्यास करना, यह तो परस्पर विरोधी बातें हैं। (iii) परमात्मा को परमधाम का वासी मानने से ही तो उसे हम मात-पिता भी कह सकते हैं; सर्वव्यापक तत्व को हम पिता कैसे कह सकते हैं। (iv) यदि परमात्मा सर्वव्यापक हो तब तो उसके अवतरण का प्रश्न ही नहीं उठता। परन्तु गीता में तो कहा है कि मैं धर्म ग्लानि के समय अवतरित होता हूँ। अतः यह बात बिल्कुल युक्ति-युक्त और ठीक मालूम होती है। अन्य लोग एक ओर तो परमात्मा को यत्र-तत्र सर्वत्र माने बैठे हैं और दूसरी ओर उसके अवतरण के लिए आशा करते हैं। आश्चर्य है कि उन्हें यह विरोध भी महसूस नहीं होता (v) यदि सृष्टि में परमात्मा सर्वत्र होते तो सर्वत्र ही शान्ति, आनन्द आदि ईश्वरीय गुण लक्षित होते। परन्तु इस संसार में तो दुःख, अशान्ति, अन्याय और अन्धकार है। अतः यहाँ तो परमात्मा है ही नहीं। यह ठीक ही कहा है कि मैं परमधाम का वासी हूँ क्योंकि सभी लोग उसे याद करते समय ऊपर की ओर देखते हैं और कहते भी हैं कि ऊपर वाला जाने।

वे दु:ख के समय पुकारते भी हैं कि हे प्रभु, आकाश सिंहासन छोड़कर इस पृथ्वी पर आ जाओ। सर्व शास्त्र शिरोमणी श्रीमद् भगवद् गीता में कहा भी गया है कि 'मैं सूर्य और तारागण के पार परमधाम का वासी हूँ।' अत: सब प्रकार से मुझे यह बात सौ प्रतिशत से भी अधिक सत्य मालूम होती है और स्वयं परमात्मा द्वारा ही कथित ज्ञात होती है। क्योंकि पहले भो भगवान ने ही गीता में कहा है और कहने वाला सर्वव्यापी हो नहीं सकता।"

अब इसके बाद गद्‌गद् भाव अर्थात् यह विचार कि शिव बाबा ने यह तो बड़ी कमाल की बात बताई है।

बाबा, धन्यवाद है आपका कि आपने मुझ अकिंचन को ऐसे रत्न देकर मालामाल कर दिया। मैं तो कई धार्मिक स्थानों पर भटकता रहा हूँ और कई पोथियाँ-पुस्तकें पढ़ता रहा हूँ पर कहीं भी तो ऐसी स्पष्ट और युक्ति-युक्त बात नहीं मिली। आपने कितना अनमोल ख़ज़ाना देकर निहाल कर दिया है। अपना परिचय आप हो देकर मानो मुझे अपना लिया है..." इस गद्‌गद् भाव रूपी शीतल जल से उपरोक्त ज्ञान-बिन्दुओं पर पुन: ध्यान देकर उन्हें बुद्धि में एकत्रित कर लेना चाहिए।

(२) यदि हम परमात्मा को परमधाम का वासी न मानकर सब जगह मानें तब तो यह अयुक्त हो जाएगा क्योंकि एक ओर यह मानना कि कुत्ता, बिल्ली, सर्प, मगरमच्छ, छिपकली, बाघ, गिद्ध, सूअर इत्यादि निकृष्ट योनियाँ हैं और दूसरी ओर प्रात: स्मरणीय, महात्माओं से भी महान, शहंशाहों के भी शहंशाह, त्रिलोकीनाथ परमात्मा को इन अथवा कीट पतंग और कूकर शूकर योनियों में मानना तो विवेक-भ्रष्टता ही का सूचक है। (ii) एक ओर परमात्मा को परमपिता कहना और परम सद्‌गुरू मानना तथा उसे परम पूज्य जानना और दूसरी ओर उसे इन योनियों में मानना गोया अपने माननीय एवं परमप्रिय पिता का अपमान करना ही तो है। अत: यह अयुक्त है। ऐसा तो कभी सोचना भी नहीं चाहिए, कहने की तो बात ही दूर रही। ऐसा तो सोचना ही पापमय है। (iii) सब देहों में तो आत्मा है; 'परमात्मा' शब्द तो सर्वश्रेष्ठ आत्मा का सूचक है जिसके एक क्षण के दर्शन मात्र के लिए ही मनुष्य तरसते हैं; अत: उसे मिट्टी के कण-कण में मानना और दूसरी ओर उसे 'पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी' अथवा 'ऊँचे से ऊँचा भगवान्' अथवा 'अल्लाह हु अकबर' (अकबर-महान) अथवा 'हाइएस्ट ऑफ द हाई और होलीएस्ट ऑफ द होली' (Highest of the High and Holiest of the Holy) मानना गोया दो परस्पर विपरीत सिद्धान्तों को मानना है। (iv) जैसे आत्मा शरीर में सर्व व्यापक नहीं है, वैसे परमात्मा भी इस विश्व में सर्व व्यापी नहीं है। और जैसे कमरे के कोने में बैठा हुआ व्यक्ति, सारे कमरे में व्यापक न होने पर भी, उसके सब स्थानों को देख सकता है वैसे ही परमात्मा भी परमधाम का वासी होते हुए त्रिकालज्ञ होने के कारण सब कुछ जानता है। (v) परमात्मा को सर्व व्यापक मानना त्रुटिपूर्ण है क्योंकि जैसे दूध में मिठास न होने पर चीनी को मिला हुआ मानना, कमरे में अन्धकार होने पर उसे प्रकाश से भरा हुआ मानना अथवा गर्मी वाले स्थान पर शीतलता को मानना अज्ञानता है वैसे ही आज जब इस संसार में प्रेम का अभाव, अज्ञानान्धकार, अन्यायतिमिर और अशान्ति एवं विकारों का ताप होने पर भी संसार में प्रेम के सागर, प्रकाश स्वरूप, दयानिधि, शान्ति के सागर परमात्मा को सर्वव्यापक मानना भी अज्ञान और अयुक्त है।

इस प्रकार मंथन करते हुए मन में गद्‌गद् भाव प्रगट होना चाहिए कि "अच्छा हुआ कि अब मैं शिव बाबा को कण-कण में और निकृष्ट योनियों में मानने रूप पाप से बच जाऊँगा। यह कैसी अजीब बात है कि मैं पहले आत्मा को परमात्मा मानते हुए परमात्मा से विमुख था और स्वयं को आस्तिक समझते हुए भी वास्तव में नास्तिक था। शिव बाबा, आपका कोटि-कोटि धन्यवाद कि आपने मुझे 'विपरीत बुद्धि से' प्रीत-बुद्धि बनाया, मुझ सोये हुए को जगाया, ज्ञान चक्षु प्रदान किया, ज्ञान अंजन दिया, नैनहीन को राह दिखाई। न मैं अपने (आत्मिक) घर को जानता था न प्रियतम परमात्मा को पहचानता था और मिथ्या ज्ञान अभिमानी और देहाभिमानी बना फिरता था

और अर्थ समझे बिना गाया करता था कि 'जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है,' अथवा कि हाज़िर नाज़िर है परन्तु यह समझता ही नहीं था कि यदि मैं जो-कुछ मान रहा हूँ, यही सत्य है तो फिर मैं भूल-भुलैया में फसा हुआ क्यों हूँ ? सचमुच, आपने मुझे समझ दी, अज्ञान अन्धेरे का नाश किया, अब मैं सोझरे में आ गया हूँ। आ···हा···मैं पदमापदम भाग्यशाली हूँ कि मुझे शिव बाबा की सही पहचान मिल गई है जिसे भले ही ये आँखें नहीं देख सकतीं परन्तु बुद्धि पहचानती है। अब पुरानी प्रीत जग गई है और मन का मीत मिल गया···।"

(३) परमात्मा को परमधाम का वासी मानने से ही उससे योग भी लगाया जा सकता है क्योंकि योग के लिए मन की एकाग्रता आवश्यक है और मन को अन्य सब ओर से हटाकर एक ज्योतिस्वरूप परमात्मा पर टिकाने का भाव ही है—उसे ज्योतिबिन्दु मानना। परमात्मा को सर्वव्यापी मानना अथवा सभी को भगवान का रूप मानना तो मन को एक स्थान पर केन्द्रित करने के प्रतिकूल ही है क्योंकि यदि सब भगवान के रूप हों अथवा सब ओर परमात्मा है तब तो मन को कहीं टिकाने की आवश्यकता ही नहीं रहती। (ii) यदि सब भगवान के रूप हों तब तो कुसंग और सतसंग में अन्तर ही क्या रहा और तब सभी के गुण भगवान के गुण हो जाने से आसुरी गुणों और दिव्य गुणों में अन्तर ही नहीं रह जाता और तब दिव्य गुणों की चर्चा ही व्यर्थ हो जाती है। (iii) परमात्मा का मनन-चिन्तन गोया उसके गुणों ही का तो मनन-चिन्तन है और यदि वह अलग नहीं हैं और विशेष गुणों वाला नहीं है तब तो उसकी चर्चा और उससे प्राप्ति की कामना निरर्थक हो जाती है और 'परमात्मा (परम+आत्मा) शब्द का कोई अर्थ ही नहीं ठहरता। अतः निश्चित है कि परमात्मा को विशेष नाम, रूप, धाम, गुण, कर्त्तव्य, सम्बन्ध इत्यादि वाला मानने से ही मनुष्य उससे योग युक्त होने की कामना करता है और योग लगाकर शान्ति, शक्ति, आनन्द इत्यादि से भरपूर हो जाता है और उसके विकर्म दग्ध होते हैं तथा उसमें दिव्य गुणों का उत्कर्ष होता है।

अब इस मंथन से इस प्रकार भाव-विभोर, प्रसन्न-चित्त, मुदित अथवा गद्‌गद् हो जाना चाहिए—"मैं खुशनसीब हूँ कि मुझे योग के लिए लक्ष्य मिल गया, गुणानुवाद के लिए सर्वश्रेष्ठ गुणों वाले प्रभु का परिचय हो गया और आत्मा तथा परमात्मा का भेद मालूम हो जाने से किनके प्रति नष्टोमोहः और किसके प्रति स्मृतिर्लब्धः होना है, किसके स्वरूप में 'मन्मनाभव' की आज्ञा के अनुरूप मन को टिकाना है—ये सभी रहस्य ज्ञात हो गये। अब मेरी बुद्धि का ताला खुल गया है, योग की चाबी मेरे हाथ लग गई है और मन को कहाँ एकाग्र करना है, मेरी यह उलझी हुई समस्या आशातीत रीति से सुलझ गई है। जीवन में ही हल्कापन आ गया है और अब योग बहुत सहज, सरल, स्पष्ट मालूम होता है। शिव बाबा, आपने मुझे, भोगी से योगी बनने का वरदान दिया है और मानव से देवता बनने के लक्षण सुझाए हैं उसके लिए मैं अवर्णनीय रूप से कृतज्ञ हूँ। यह मेरे जीवन की स्वर्णिम घड़ी है कि अब मुझे आपका सहारा, साथ और स्नेह का अतुलनीय सौभाग्य मिला है···"

इसी प्रकार चौथे प्रश्न को लेकर भी ज्ञान-मंथन करना चाहिए और कृत्य-कृत्य अनुभव करना चाहिए।

**जगदीश**

## पवित्रता के सूचक रक्षा बन्धन महोत्सव की शुभ बधाई

# स्नेह, एकता, विश्वास और सम्मान का आपस में कंगन बाँध संगठन को शक्तिशाली और एकमत बनाओ

## रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर दीदी, दादी का आह्वान

हम यह जो विश्व शान्ति महासम्मेलन करने जा रहे हैं—इस विश्व शान्ति का फाउन्डेशन है—पहले हम आपस में शान्तिमय रहें। जब तक हम सबने आपस में यह शान्ति का फाउन्डेशन नहीं डाला है तो सफलता भी कैसे होगी? बाबा का विशेष इशारा है—पहले स्वयं में शान्ति का फाउन्डेशन डालो। हम सबका यह शुभ संकल्प है कि हमें सारे विश्व में शान्ति की तरंगे फैलानी हैं। हमारे द्वारा सारे विश्व को शान्ति की किरणें मिलें। तो हम ब्राह्मण संगठित रूप में जितना मिलकर कोई भी कार्य करते हैं उतनी पावरफुल वायब्रेशन फैलती हैं। इसके लिए हम सभी मिलकर ऐसा कंगन बाँधे—अभी से ऐसा फाउन्डेशन मजबूत करें—जो सबको पीस का वायब्रेशन मिलता रहे और पीस (Peace) के साथ-साथ हमारे लव (Love) और युनिटी (Unity) का भी वायब्रेशन फैलता रहे।

जितना हम स्वयं को अन्तर्मुखी बनायेंगे—जितना हम एक दो के प्रति शुभ भावना रखेंगे उतना ही हम एक दो के सहयोगी साथी रहेंगे। कोई भी महान कार्य करने में हम सबका विशेष साथ है। तो अब क्यों-क्या के संकल्पों को समाप्त कर स्वयं को अचल बनाओ। दादी-दीदी की यह बहुत बड़ी आश है कि हम सब साथ में मिलकर पावरफुल फाउन्डेशन डालें। पीस फाउन्डेशन के लिए हमारा है ही लव एण्ड युनिटी। जितना हम एक दो को रिगार्ड (सम्मान) देंगे और आपस में फेथ (Faith) रखेंगे उतना लव और युनिटी रहेगी।

तो आज हम सभी ब्राह्मण—जो प्रैक्टिकली दुनिया का त्याग किये हुए हैं। निरन्तर बाबा की छतरी के नीचे हैं। लोग कहते परमात्मा सर्वव्यापी हैं—परन्तु हम ब्राह्मण अनुभव से कहते कि प्यारा बाबा हम सबके दिलों में व्याप्त है। हमारे सामने निरन्तर सदा ही वह हाज़िर हजूर है। यह भी हम बच्चों की भावना है, जिसे उन्होंने सर्वव्यापी कह दिया है। उठते बैठते चलते हम सब बाबा की सेवा पर हैं। हम खाते बाबा का, पीते बाबा का, बाबा के लिए कमाते। हमारा बाबा विचित्र, बाबा के हम बच्चे विचित्र,…हमें दुनिया क्या जाने। तो कितना न हम महान भाग्यशाली ब्राह्मण हैं—जो मीठे बाबा ने हमें अलौकिक तख्त पर बिठाया है। हमें उड़ने का तख्त मीठे बाबा से मिला है। हमारे सामने कोई भी मेरा-पन नहीं। न मेरा स्टूडेन्ट, न मेरी सर्विस। सोने की भी जंजीर नहीं। न कोई मेरी चार्ज है, न कोई मेरी डिपार्टमेन्ट है। हम सब बाबा के बच्चे, बाबा की भुजायें, बाबा के मददगार हैं।

हम सब प्यारे बाबा की सेवा के निमित्त सर्वेन्ट हैं—हमारा सेठ, हमारा मालिक एक बापदादा है—हम सब उसके इशारे पर चलते हैं। तो क्या आज हम सभी मिलकर बाबा के सामने यह वायदा नहीं कर सकते—कि बाबा आपने जो कहा 'जिद्द और सिद्ध को छोड़ो', उसे हम सदा के लिए छोड़ते हैं। हम तो आपस में बहुत ही लव से, रिगार्ड से, युनिटी से और एक दो में फेथ रखते हुए चलेंगे—ऐसा कंगन आज हरेक को बाँधना है। इसके लिए बाबा ने कहा—**तुम अपनी बुद्धि को समर्पण करो—यह सौगात मुझे दे दो।**

तो दीदी-दादी के दिल की आश है—कि सभी ब्राह्मण कुल भूषण—आज से इन ५ वायदों का सूत्र बांधें—

**१. हम सब एक दूसरे में फेथ रख, लव-युनिटी व रिगार्ड से चलेंगे। चाहे स्टूडेन्ट हो या सर्विस साथी।**

२. सेवा में एक दो के कनेक्शन में जो भी बातें आयेंगी—उसे आपस में समाधान कर एक दो को सैलवेशन देकर खुश करेंगे।

३. कभी भी किसी की निंदा व परचिन्तन की बात एक दूसरे से नहीं करेंगे। स्व उन्नति की बात से स्वयं को तथा दूसरों को आगे बढ़ाते रहेंगे।

४. बापदादा व निमित्त बनी हुई बड़ी बहनों से स्व उन्नति वा सेवा के प्रति जो भी डायरेक्शन मिलेंगे उसे प्रैक्टिकल कर फालो करेंगे।

५. सरेन्डर बुद्धि होकर बेहद की दृष्टि से स्व व सेवा प्रति सदा सहयोगी रहेंगे।

हम सब मीठे बाबा के सखा-सखी बन जाएं तो आपस में भी एक ही स्नेह के सूत्र में रह सकते हैं। हम सबने बाबा को जीवन दान दी है। हम सब दान दिये हुए बच्चे हैं। तो हम शान्ति का भी दान दें। अगर हम एक दो को डिस्टर्ब करते, वाह्यात बातें सुनना सुनाना माना पापात्मा बनना। वह दोस्त नहीं, दुश्मन है। तो क्या यह बाबा ने हमें आशीर्वाद दी ! मैं अगर वाह्यात बातें करती तो मैंने श्रीमत का उल्लंघन कर विकर्म बनाया या सुकर्म ? तो हम सब मिलकर सबको शान्ति का दान दें। पीसफुल वातावरण बनाने का दृढ़ संकल्प लें।

हमें तो अब कई बार आता—बाबा अब स्वीट होम ले चल। स्वयं को देखना है आज शरीर छूट जाए तो हमारी स्थिति क्या होगी। हमें तो कर्मातीत होना है। हमें तो बाबा के स्वीट घर का गेट खोलना है। जब वतनवासी वतन में बैठा तो हमें इस दुनिया से क्या मतलब। हमें किसी के लिए नहीं रुकना है। हमें तो आकारी वतन में जाना है। हमें स्वयं को रेडी करना है। दूसरे से क्या लेना ! मुझे क्या करना है—यह सोचो। हमें तो अब घर जाना है या छोटी-छोटी बातों में समय गंवाना है। आपस में सब स्नेह का सूत्र बांधे तो जो छोटी-छोटी बातों में बड़ों का समय जाता वह खत्म हो जाए। खुद ही किचड़ा फेंकते हो तो फिर खुद को ही मच्छर काटते हैं। हमें अपना वातावरण बहुत ही युनिटी और लव का बनाना है।

# आयी है पावन-राखी

ब्र० कु० हिरण्य भाई, काठमान्डू (नेपाल)

आयी है पावन राखी,
पावन बनने की याद दिलाती।
अपवित्रता की जड़ उखाड़कर
पवित्रता की कलम लगाती॥

जातिवाद और धर्म भेद से
हर मानव को मुक्त कराती।
व्यभिचार और भ्रष्टाचार को
दुनिया से है दूर भगाती॥

ज्ञान-योग धारणा सेवा के
चार सूत्र का कंगन बांधती।
प्रेम-युक्त जीवन जीने की,
फिर से सबको याद दिलाती॥

परमधाम के परमपिता का,
ये सुन्दर सन्देश सुनाती।
दुनिया को पावन करने का,
हर मन में है बीज उगाती॥

पाटन सेवा केन्द्र पर "योग एक औषधि" विषय पर वैज्ञानिक मिलन का उद्घाटन डा० सी० सी० पारीख मंगलदीप जलाकर कर रहे हैं, ब्र० कु० सरला नीलम साथ में हैं।

# ब्राह्मण जीवन में पवित्रता का महत्व

(ले० ब्र० कु० रेवादास, बिलासपुर)

ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मचर्य में रमण करने वाला। सम्भवतः संगम पर इसलिए ही भगवान सर्वप्रथम शूद्र को ब्राह्मण बनाने का दिव्य कार्य करते हैं। ब्राह्मण बनने के पश्चात् ही ब्रह्मचर्य की रक्षा का उत्तरदायित्व सहज उठाया जा सकता है। क्योंकि ब्राह्मण हर कीमत पर पवित्रता की रक्षा का उत्तरदायित्व उठाता है इसलिए पवित्रता ही ब्राह्मण जीवन अथवा अलौकिक जीवन की सर्वश्रेष्ठ अमूल्य पूंजी है जो परमात्मा से वरदान के रूप में हर ब्राह्मण कुल भूषण को प्राप्त होती है। पवित्रता के इस वरदान को कोई तो जान की बाजी लगाकर भी सम्भाल लेता है फिर कोई गवाँ भी देता है।

## पवित्र जीवन का महत्व

पतित और पावन, पूज्य और पुजारी, ऊँच और नीच का अन्तर केवल पवित्रता के आधार पर है। हार और जीत का यह खेल, आधा कल्प दिन तथा आधा कल्प रात का यह सृष्टि-चक्र आत्मा की पवित्रता और अपवित्रता पर निर्भर करता है। पवित्र को सुख और अपवित्र को दुःख की प्राप्ति होती है। पवित्रता के कारण यह विश्व शिवालय और अपवित्रता के कारण वेश्यालय कहलाता है। पवित्रता की ज़रा सी धारणा करने वाला भी द्वापर और कलियुग में महात्मा कहलाता है जबकि सत-त्रेता में सम्पूर्ण निर्विकारी होने के कारण उसे देवता की संज्ञा दी जाती है। जिसके आगे आज के बड़े-बड़े राजनेता, जगतगुरू आदि सभी माथा टेकते हैं।

पवित्र जीवन की जितनी कीमत आँकी जाए उतनी ही थोड़ी है क्योंकि जैसे शरीर में प्राण का महत्व है वैसे ही मनुष्यात्मा में पवित्रता का महत्व है। अपवित्र जीवन गन्ने के उस छिलके के समान है जिसमें कोई रस नहीं। विवाह से पूर्व कन्या की पूजा केवल उसके पवित्र जीवन के आधार पर होती है। पवित्रता ही पर्सनैल्टी है! सुन्दरता है!! महानता है!!! अपार शक्ति है!!!! जीवन की समस्त धारणाओं का उच्चतम शिखर है। पवित्रता से बुद्धि दिव्य होती है, उत्साह, उमंग, आत्मिक शक्ति तथा विश्व पर राज्य करने की शक्ति प्राप्त होती है। पवित्रता ही सारे ज्ञान का ख़जाना है। पवित्रता के बल से ही धर्म की स्थापना होती है। यह ईश्वरीय पढ़ाई भी पवित्रता की परसेंटेज के अनुसार ही बुद्धि में बैठती है। जितनी पवित्रता की धारणा उतनी ही बुद्धि निर्मल एवं शक्तिशाली होगी। पवित्रता वह शक्ति है जिसके द्वारा विश्व की किसी भी समस्या, परिस्थिति अथवा विघ्न को पार किया जा सकता है। जिसके पास पवित्रता का बल है उसे किसी के बल की आवश्यकता नहीं रहती। प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का उपाय एक मात्र पवित्रता ही है। परमात्मा को प्रत्यक्ष करने का सर्वश्रेष्ठ साधन गृहस्थ में पवित्रता का पालन करना है। पवित्रता से सुगन्ध और ज़रा-सी अपवित्रता से दुर्गन्ध आती है। विश्व-परिवर्तन का कार्य पवित्रता की धारणा के बिना कठिन ही नहीं, असम्भव भी है! इसलिए यदि पवित्रता की रक्षा जान की बाजी लगाकर भी करनी पड़े तो निःसंकोच करनी चाहिए क्योंकि जान का महत्व भी उसमें पवित्रता के प्राण रहने तक ही है।

## पवित्रता से लाभ

पवित्रता अपना-लेने पर समस्त धारणाएँ जीवन में स्वतः ही आने लगती हैं। अपवित्र होने पर सिर झुक जाता है, पवित्र रहने से सिर ऊँचा उठा रहता है। जीवन संघर्ष नहीं अपितु सरल एवं सहज अनुभव

होता है। जितनी पवित्रता की प्रतिशत अधिक उतना ही अन्य आत्माओं पर हमारा प्रभाव अधिक पड़ता है। यह देह चाहे कितनी ही सुन्दर क्यों न हो यदि आत्मा पवित्रता के उच्च शिखर पर स्थित है तो किसी की दृष्टि-वृत्ति इस देह की ओर आकर्षित हो नहीं सकती। आज भी देवी-देवताओं के जड़ चित्रों को देख किसी की दृष्टि-वृत्ति खराब नहीं हो सकती ! पवित्रता को अपनाए बिना परमात्मा से मिलन सम्भव नहीं और न ही घर भी वापिस जा सकते हैं।

अत: पवित्र बनने में ही हमारा भला है और यही बुद्धिमानी है। जो पवित्र है वही योगी भी है। जो योगी है वही सबसे ज्यादा प्रसन्नचित्त भी है।

### पवित्र कैसे बनें ?

पवित्र रहने के लिए यह निश्चय, स्मृति अथवा नशा होना चाहिए कि 'मैं शुद्ध-पवित्र आत्मा हूँ।' 'महान आत्मा हूँ।' पवित्र ही ब्राह्मण और ब्राह्मण ही सुन्दर और आकर्षक शरीर भविष्य में प्राप्त होगा। विचार करना है कि क्या स्वयं को इतना पावन बनाया है जो भविष्य में श्री लक्ष्मी-श्री नारायण को वरमाला पहना सको। जबकि इस संगम पर ही पवित्रता का अनुभव किया जा सकता है और कि ब्राह्मण जीवन का बड़े से बड़ा कलंक अपवित्रता ही है तब हमें अपवित्र बन कर कुल कलंकित क्यों बनना है। अपवित्र संकल्प आते ही विचार करना चाहिए कि एक ओर परमात्म सुख, दूसरी ओर क्षणभंगुर शारीरिक सुख (वास्तव में दु:ख) है। इस सम्बन्ध में अव्यक्त बाप-दादा के ये महावाक्य याद करने चाहिए कि 'यह देह विषैले साँप की तरह है इसे टच करना अथवा इसकी ओर आकर्षित होना गोया स्वयं को मूर्छित करना है। जैसे योग अग्नि से पाप भस्म होते वैसे ही सूक्ष्म भोग भोगने की काम अग्नि से पुण्य की कमाई चट हो जाती है। सब-कुछ गवाँ कर भी कुछ पा लिया तो उसे पाना कहेंगे या गँवाना ? इस प्रकार सूक्ष्म पुरुषार्थ के साथ स्थूल में भी परिवर्तन की परम आवश्यकता है। प्रतिदिन नियमित-रूप से क्लास में जाना, अन्न दोष, संग दोष का परहेज घर का वातावरण आध्यात्मिक बनाए रखना, कामुक वृत्ति का दैहिक शृंगार न करना इत्यादि पवित्रता-पालन के लिए अनिवार्य हैं। □

गीत

## अब न गलेगी तुम्हारी दाल

(ले० ब्र० कु० रश्मि, गोरेगाँव, बम्बई)

सुनो माया के नन्हें बाल,
अब न गलेगी तुम्हारी दाल।
हमें हराने की है मजाल ?
आये हैं हम शिव के लाल। सुनो०

खींचेंगे माया की खाल,
लाये हैं हम ज्ञान की ढाल।
तोड़ेंगे हम इसका जाल,
आया समझो तुम्हारा काल।
जाओ नहीं तो होंगे बेहाल। सुनो०

यहाँ नहीं तुम्हारा काम,
ले नहीं सकते हमारा नाम।
छोड़ो बुरी तुम अपनी चाल,
नहीं तो लेंगे रूप विकराल।
आया समझो तुम्हारा काल। सुनो०

गायेंगे हम शिव के गान,
दे देंगे अवगुण का दान।
जिसका साथी है भगवान,
उनको क्या रोके शैतान ?
देखो हमारी होगी कमाल। सुनो०

—:०:—

# रक्षा-बन्धन

(ले० ब्र० कु० हृदय मोहिनी, देहली)

मानव स्वभाव से ही स्वतन्त्रता प्रेमी है। अतः मनुष्य जिस बात को बन्धन समझता है, वह उससे छूटने का प्रयत्न करता है। परन्तु 'रक्षा-बन्धन' को बहनें और भाई त्योहार अथवा उत्सव समझकर खुशी से मनाते हैं। यह एक न्यारा और प्यारा बन्धन है।

बन्धन दो प्रकार के होते हैं—एक तो ईश्वरीय और दूसरे साँसारिक अर्थात् कर्मों के बन्धन। ईश्वरीय बन्धन से मनुष्य को सुख मिलता है परन्तु दूसरी प्रकार के बंधन से दुःख की प्राप्ति होती है। रक्षा-बंधन ईश्वरीय बन्धन, आध्यात्मिक बन्धन अथवा धार्मिक है। विचारवान् मनुष्य ईश्वरीय बन्धन में तो बँधना चाहते हैं परन्तु माया के बन्धन से मुक्त होना चाहते हैं। यह बन्धन उन्हें अप्रिय नहीं लगता। परन्तु आज लोगों ने इसे एक लौकिक रस्म ही बना दिया है। इसी कारण, यह भी बन्धन भासने लगा है। जैसे आध्यात्मिकता और धर्म-कर्म के क्षीण हो जाने के कारण संसार की वस्तुओं से अब सत् अथवा सार निकल गया है वैसे ही आध्यात्मिकता को निकाल देने से इस त्यौहार से भी सत् अथवा सार निकल गया है वरना यह त्यौहार बहुत ही महत्वपूर्ण और उच्च कोटि का त्यौहार है।

**बहनें भाइयों से किस प्रकार की रक्षा चाहती हैं ?**

भारत देश अपनी फ़िलासोफ़ी (Philosophy) के लिये प्रसिद्ध है, अब आप देखेंगे कि इन त्योहारों के पीछे भी एक बहुत बड़ी फ़िलासोफ़ी (Philosophy) अथवा ज्ञान है। रक्षा बन्धन के गूढ़ रहस्य को समझने के लिए पहले यह जानने की आवश्यकता है कि मनुष्य की सब प्रकार की रक्षा कैसे और किस द्वारा हो सकती है ? और बहनें अपने भाइयों से किस प्रकार की रक्षा चाहती हैं ?

विचार करने पर आप इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि प्रत्येक मनुष्य पाँच प्रकार की रक्षा चाहता है। तन की रक्षा, धर्म, सतीत्व अथवा पवित्रता की रक्षा, काल से प्राणों की रक्षा, आपदाओं अथवा संकटों से रक्षा और माया के विघ्नों से रक्षा। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या कोई मनुष्य इन पाँचों प्रकार की रक्षा करने में समर्थ है भी ?

सर्वप्रथम तन की रक्षा पर ही विचार कर लीजिये। तन की रक्षा के लिए मनुष्य अनेक कोशिशें करता है परन्तु फिर भी अन्त में उसे यही कहना पड़ता है कि जिसकी मौत आई हो उसे कोई नहीं बचा सकता। अर्थात्, "भावी टालने से नहीं टलती।" इस सिद्धान्त की पुष्टि के लिए अनेक वास्तविक वृत्तान्त प्रसिद्ध हैं।

**दूसरी प्रकार की रक्षा है – धर्म की, पवित्रता की अथवा सतीत्व की रक्षा**—कई लोगों का कहना है कि मुसलमानों के शासन काल में बहनें भाइयों को इसलिए रक्षा-बन्धन बाँधती थीं कि यदि मुसलमान उनके सतीत्व पर आक्रमण करें तो भाई उनकी रक्षा करें। परन्तु मनुष्य सर्वसमर्थ तो है नहीं, न जाने कितनी बहनों-माताओं की लाज लुटी होगी। दुष्टों से पवित्रता की रक्षा भी वास्तव में सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए आख्यान प्रसिद्ध है कि कौरवों की भरी सभा में जब द्रोपदी का चीर हरण होने लगा तो द्रोपदी ने भगवान् ही को पुकारा था क्योंकि तब कोई भी मित्र या सम्बन्धी उसकी रक्षा न कर सका था। इसलिए ऐसी आपदा के समय लोग भगवान् ही को सम्बोधित करके कहते हैं—'हे प्रभु, हमारी लाज रखो। हमारे धर्म की रक्षा करो, भगवान् !" अतः निस्संदेह भगवान् ही हैं जो माताओं-बहनों के 'चीर बढ़ाते' हैं अर्थात् उनके सतीत्व और धर्म की रक्षा करते हैं। इसी कारण दुःख के समय मनुष्य के मुख से यह शब्द निकलते हैं—"हे प्रभु, मुझे सहारा दो।"

**तीसरी प्रकार की रक्षा है—काल के पंजे से रक्षा**—मनुष्य तो स्वयं भी कालाधीन हैं। बड़े-बड़े योद्धाओं को भी आख़िर काल खा जाता है। सिकन्दर का भी उदाहरण हमारे सामने है। उसने अनेकानेक सैनिकों को मारा और मरवाया परन्तु स्वयं को काल से नहीं बचा सका।

निश्चय ही काल के पंजे से छुड़ाने वाले भी एक परमात्मा ही हैं जिन्हें 'कालों का काल', 'महाकाल', 'महाकालेश्वर' (शिव), 'अमरनाथ' अथवा 'प्राण-नाथ', भी कहा जाता है। अतः काल से बचने के लिए मनुष्य मृत्युञ्जय का पाठ करते हैं अर्थात् परमात्मा शिव ही की शरण में जाने की कामना करते हैं। जन-श्रुति है कि जिस मनुष्य ने अच्छे कर्म किए होते हैं, उसकी मृत्यु होने पर जब यमदूत आते हैं तो भगवान् के पार्षद उन यमदूतों को भगा देते हैं।" तो वास्तव में परमात्मा की रक्षा मिलने से ही मनुष्य यमदूतों से बच सकते हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा ही अजेय हैं और उन्हीं की महिमा में कहा जाता है कि "जिसको राखे साइयाँ, मार न सके कोय। बाल न बाँका कर सके, चाहे सब जग बैरी होय।"

**सांसारिक आपदाओं अथवा लौकिक संकटों से रक्षा चौथे प्रकार की रक्षा है**—सदा के लिए दुःखों अथवा संकटों से भी एक परमात्मा ही रक्षा दे सकता है; कोई भी मनुष्यात्मा यह कार्य नहीं कर सकती। परमात्मा को ही **'संकट मोचन'**, **'दुःख भंजन'** और 'सुख-दाता' कहते हैं। परमात्मा ही काल और कण्टक दूर करने वाले हैं। उन्हें ही 'हरि' अथवा 'हरा' अर्थात् "दुःख एवं संकट हरने वाला" माना जाता है। प्रकृति तो उनकी दासी ही है।

माया के बन्धन से भी परमात्मा ही छुड़ाते हैं, तभी तो मनुष्य परमात्मा को पुकार कर कहते हैं— "विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा।" गज और ग्राह का जो प्रसंग प्रसिद्ध है, वह भी इसी रहस्य को स्पष्ट करता है कि जब ग्राह गज को निगलने ही वाला था तो भगवान् ही ने ऐसे समय उसकी रक्षा की। फूल तोड़कर अपनी सूंड ऊपर की तो भगवान् ने यह देखकर कि वह पुष्प चढ़ा रहा है अर्थात् याद कर रहा है, उसकी रक्षा का संकल्प किया। वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ में ज्ञानी मनुष्य ही गज हैं, माया ही एक ग्राह है, यह संसार एक सागर है और कमलरूपी पुष्प अलिप्त जीवन का सूचक है। अतः आख्यान का भाव यह है कि माया के आघातों से भगवान् ही ज्ञानवान् मनुष्यों की रक्षा करते हैं। ज्ञान ही स्वदर्शन चक्र है जिससे माया का गला कट जाता है और परमात्मा ही सभी के रक्षक हैं। इसी कारण गीता में यह वाक्य हैं कि साधुओं का भी परित्राण करने वाले परमात्मा ही हैं।

### बहनें रक्षा-बन्धन क्यों बाँधती हैं ?

अब प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा ही पाँचों प्रकार की रक्षा करते हैं तो बहनें, भाइयों को रक्षा-बन्धन क्यों बाँधती हैं अथवा ब्राह्मण भी रक्षा-बन्धन क्यों बाँधते हैं ? इस बात को समझने के लिए, आपको यह जानना चाहिए कि इस पर्व को 'विष-तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्य-प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है। इन नामों से सिद्ध है कि यह बन्धन विषय-विकारों को छोड़ने और पुण्यात्मा बनने के लिए है। अतः 'रक्षा-बन्धन' पवित्रता अथवा धर्म की रक्षा करने का बन्धन है।

आप जानते हैं कि बहिन और भाई का सम्बन्ध बहुत पवित्र होता है। अतः बहनों का भाइयों को बन्धन बाँधने का अर्थ भी यही होता है कि भाई यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति को पवित्र बनायेंगे अथवा मन, वचन, और कर्म से पवित्र रहकर सभी नारियों से अपनी बहन के समान बर्ताव करेंगे। ब्राह्मणों के द्वारा रक्षा-बन्धन बँधवाने का अर्थ भी यही है। प्राचीन काल में सच्चे ब्राह्मण पवित्र रहकर दूसरों को पवित्र रहने की प्रेरणा (शिक्षा) देते थे। अतः इस दिन वह बन्धन बाँधते हैं ताकि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता का व्रत ले। परन्तु आज न तो बहनें ही इस मनसा से 'रक्षा-बन्धन' बांधती हैं और न ब्राह्मण ही। आज मनुष्य इस आध्यात्मिक रहस्य को भूल गया है और वह इस महान् पर्व को एक रीति-रिवाज की तरह ही मानता है। इसलिए, आज यह पर्व **'विष तोड़क'** अथवा **'पुण्य-प्रदायक'** पर्व के रूप में नहीं रहा और व्यक्ति अथवा समाज को इससे वह प्राप्ति नहीं होती जो इसे यथार्थ रूप में मनाने से हो सकती है। □

# माया आई तो क्या हुआ ?

(ब्र० कु० राजकुमारी, शालीमार बाग, देहली)

आह ! चन्दन कितना सुगन्धित !
कितनी बड़ी इसकी कीमत,
पर इतना दुर्लभ क्यों ?
चहुँ ओर लिपटे रहते साँप।
यह भी अछूता नहीं, तो फिर तेरे आगे—
माया आई तो क्या हुआ ?

तुम आत्मा तो चन्दन से बहुमूल्य कई गुणा।
वो देखो—गुलाब कितना सुगन्धित !
रंग-रूप करे आकर्षित।
पर इतना दुर्लभ क्यों ?
चहुँ ओर खड़े काँटे।
यह भी अछूता नहीं, तो फिर तेरे आगे
माया आई तो क्या हुआ ?

तुम आत्मा तो गुलाब से प्यारी कई गुणा।
वो लहरें नदिया की, कितनी करें हर्षित।
दूर हटे गर्मी, करें आह्लादित॥
पर—जल तक जाना दूभर क्यों ?
बसी किनारे पर दलदल, यों
यह भी अछूती नहीं, तो फिर तेरे आगे—
माया आई तो क्या हुआ ?

तुम आत्मा उस नदिया से पावन कई गुणा।
वाह ! कमल कितना श्वेत !
लग रहा कितना पुनीत !
पर है खिलता कहाँ ?
भरी मात्र कीचड़ जहाँ।
यह भी अछूता नहीं, तो फिर तेरे आगे—
माया आई तो क्या हुआ ?

तुम आत्मा स्वच्छ, कमल से कई गुणा।
वो दूर हँसता चाँद कितना शीतल !
कितना मन भावन, कितना प्रीति जनक !
पर यह क्या ? बीच में गहरा सा दाग,
तोड़े दम्भ, न करने दे अभिमान;
यह भी अछूता नहीं, तो फिर तेरे आगे—
माया आई तो क्या हुआ ?

तुम आत्मा चाँद से उज्ज्वल कई गुणा।
क्या नहीं सुना तुमने वो ?
चाँद को तकता चकोर जो,
होकर पक्षी चुगे अंगारे
खुश, फिर भी न कभी तंग हुआ
तो फिर तेरे आगे—
माया आई तो क्या हुआ ?

तुम आत्मा उस पक्षी से उन्नत, हल्की कई गुणा।
यह तो जग सदा रहा दस्तूर,
प्रारब्ध से पूर्व होवे परीक्षा भरपूर,
औरों को फिर प्राप्ति क्षण भंगुर,
तेरा तो जन्म-जन्म का अंकुर,
तेरे उच्च भाग्य का उदय हुआ।
फिर तेरे आगे—माया आई तो क्या हुआ ?

तू तो प्रकृति से भिन्न अलौकिक सदा।
नन्हें दीपक को न छोड़े तूफाँ,
वह फिर भी जले, न होवे फाँ;
तुम आत्मा तो फिर सच्चा दीपक,
तुझमें ज्ञान की बाती, औ योग घृत,
जब जड़ होके न टूटा, सदा रहा जगा।
तो फिर तेरे आगे—माया आई तो क्या हुआ ?

न घबराना, न हट जाना,
सदा पुरुषार्थ करते रहना,
तेरा जीवन हीरे तुल्य हुआ।
माया आई तो क्या हुआ ?

□□

# क्या यह रामराज्य स्थापन हुआ है ?

ब्र० कु० कमलमणि, कृष्ण नगर, देहली

रामराज्य के लिये कहते हैं, वहाँ शेर और बकरी एक घाट पानी पीते थे, घी, दूध, की नदियाँ बहती थीं, राम राजा, राम प्रजा राम साहूकार था··· सम्पूर्ण सुख, शान्ति का राज्य था। ऐसा रामराज्य गाँधी जी चाहते थे। आज देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुए ३५ वर्ष हो चुके हैं। कितनी पंचवर्षीय योजनाएँ बन चुकी हैं, क्या इस स्वतन्त्रता प्राप्ति से भारत सुखी हुआ है ? क्या गाँधी जी के रामराज्य के स्वप्न साकार हो रहे हैं ? क्या भारतवासियों की सुख, शान्ति, सम्पन्नता की इच्छा पूर्ण हुई है ? क्या घर-घर स्वर्ग बन रहा है ? क्या प्रजा और राज्याधिकारी सुख की नींद सोते हैं ? क्या भारतवासी अपनी वर्त्तमान स्थिति से सन्तुष्ट दिखाई देते हैं ? इन सब पर विचार करने से उत्तर ना में ही मिलता है और इस निर्णय पर पहुँचते कि भारत को राजनीतिक स्वतन्त्रता तो मिली परन्तु देश को विदेशी शत्रुओं के भय से, रोग और निर्धनता से, दुःख और अशान्ति से तथा विकारों से स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हुई। बेकारी और बीमारी यहाँ से नहीं गई। घी और दूध की नदियों की तो बात अलग रही यहाँ दूध की बोतलें भी नहीं मिलतीं, असली घी दुर्लभ है, रहने के लिए मकान की समस्या एक जटिल समस्या है। जनसंख्या में वृद्धि, जनता में पारस्परिक भेदों इत्यादि के रूप में समस्याओं से देश की परिस्थिति आपदकालीन परिस्थिति है। अतः प्रश्न उठता है कि आखिर ऐसी दयनीय स्थिति का कारण क्या है ?

**धर्म-विमुखता—आज की दुर्दशा का कारण ?**

कहा जाता है धर्म में शक्ति है (Religion is might) धर्म से हमारा तात्पर्य कोई देह के धर्म—हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म या ईसाई धर्म से नहीं है बल्कि दैवी गुणों की धारणा से है। पवित्रता धर्म का मूल है। चरित्र को ऊँचा उठाना ही धर्म का उद्देश्य है। हर एक चाहता तो है कि वह चरित्रवान बने, सद्-गुणों को धारण करे, बुरी आदतों से दूर रहे, परन्तु चाहते हुए भी वैसा बन नहीं पाता क्यों ? ऊँचा उठने के लिए, पुराने संस्कारों को त्यागने के लिए शक्ति (Will Power) चाहिये और वह प्राप्त होगी एक सर्वशक्तिवान परमात्मा से। यह प्राप्ति परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ने (योग,) से ही हो सकती है। परन्तु आज ईश्वर की चर्चा को व्यर्थ व्यापार माना जाता है। चरित्र में अथाह शक्ति है, पवित्रता में बहुत बल है, प्रभु प्रीति अथवा योग में असीम ताकत है परन्तु आज प्रजा का तो कहना ही क्या राज्यधिकारियों में भी पवित्रता की धारणा नहीं। बल नहीं हैं क्योंकि आज सभी ईश्वर से विमुख हैं। विमुख होने के कारण ही दुःख हैं, सम्मुख होने में ही सुख होता है क्योंकि ईश्वर ही आनन्द और शान्ति का सागर है और सुख का दाता है। आज मनुष्यों में सत्य न होने के कारण पदार्थों से भी सत् निकल गया है। मनुष्यों ने अपने धर्म (पवित्रता) को छोड़ दिया है। जब समाज की ऐसी

स्थिति होती है अर्थात् जब मनुष्य स्वधर्म से च्युत होकर, विकारों से परतन्त्र होकर उपद्रव मचाना प्रारम्भ करते हैं तो प्रकृति भी उपद्रव अथवा उत्पात मचाती है। वास्तव में मनुष्यों के स्व-धर्म में टिकने से ही स्व-राज्य अथवा स्वतन्त्रता होती है; पर धर्म में टिकने से ही पर-राज्य अथवा परतन्त्रता होती है। अतः भले ही आज राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त है परन्तु फिर भी देश विकारों से परतन्त्र है।

हर एक के मन पर ५ विकारों (रावण) का अधिकार है हर घर, हर गली हर गाँव, हर शहर पूरा समाज देश ही इन विकारों की चपेट में है। वेश्या-वृत्ति, हिंसा, खून-खराबा, मार-धाड़, लड़ाई-झगड़े, दिनों-दिन बढ़ते जा रहे हैं। चारों ओर रावण (५ विकार) ही दिखाई देता है। हर घर जो रामराज्य में शिवालय था वेश्यालय बन चुका है। क्या ऐसे राज्य के लिए कितने ही देश-भक्तों और वीरों ने बलि दी थी। क्या ऐसी हालत देखने के लिए भारतवासियों ने अपनी जान और माल की बाज़ी लगा दी थी। लाखों घर बे घर हो गए थे और न जाने कितने लोगों का धन-दौलत छिन गया था। स्पष्ट है कि वास्तव में आज सभी चिन्ताओं, समस्याओं तथा दुःखों का कारण विकारों की परतन्त्रता और आहार-विहार की अशुद्धि है। अतः सिद्ध है कि यद्यपि महात्मा गाँधी ने शास्त्र-शिरोमणी श्रीमद्भगवद्गीता से प्रेरणा पाई और कुछ आध्यात्मिक बल भी प्राप्त किया तो भी वह वास्तविक स्वतन्त्रता अथवा राम-राज्य, जो वह चाहते थे, स्थापन न कर सके। परन्तु आज तो आया राम, गया राम, तथा चालुराम राज्य बन गया है जो कि धक्के से चलाया जा रहा है।

### अब राम-राज्य कैसे आये ?

जब तक मानव का अपने ऊपर (स्व पर) राज्य नहीं, जब तक उसकी अपनी कर्मेन्द्रियां वश में नहीं, संकल्प, बोल और कर्मों पर अधिकार नहीं, वह कर्म-श्रेष्ठ नहीं बन सकता। फलतः संस्कार श्रेष्ठ नहीं हो सकते, जिससे उसमें स्थायी स्थायी पवित्रता, सुख, शान्ति का वास नहीं हो सकता। जब तक एक-२ व्यक्ति का जीवन सुखमय शान्तमय न हो तो रामराज्य कैसे कहा जा सकता है ?

अब वास्तविक स्वतन्त्रता तब स्थापन हो सकती है जब राजा और प्रजा धर्म-सम्पन्न, पवित्र, निर्विकारी अहिंसक, सतोगुणी और दैवी प्रकृति वाले हों और जब दैवी गुण-कर्म-स्वभाव वाले राजा-रानी का दैवी प्रजा पर राज्य हो। अब जो प्रजा का प्रजा पर राज्य है, उसे राज्य (Sovereignty) नहीं कहेंगे, क्योंकि इसमें न कोई राजा है और न कोई रानी।

इसके अतिरिक्त राम-राज्य अथवा सच्चे दैवी स्वराज्य की स्थापना के लिए संसार भर के रावण राज्य अर्थात् आसुरी राज्यों का विनाश भी आवश्यक है क्योंकि देवताओं के राज्य में असुरों का अस्तित्व नहीं होता। अतः सच्ची स्वतन्त्रता अर्थात् राम-राज्य की स्थापना तभी हो सकती है जब तमोगुण, विकार, अधर्म और अमर्यादा का दौर समाप्त हो अर्थात् वर्तमान कलियुगी सृष्टि का विनाश हो और पवित्रता, धर्म और दैवी मर्यादा के युग अर्थात् 'सतयुग' तथा त्रेतायुग की पुनः स्थापना हो। यह कार्य अब गीता के निराकार भगवान् शिव क्रमशः महादेव शंकर द्वारा तथा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा करा रहे हैं।

## गीत (ले० ब्र० कु० मोहन, अमृतसर)

पवित्रता अपनाओ, सर्व-सुख तुम पाओ
शिवपिता का यह सन्देशा, जन-जन तक पहुँचाओ
सर्व गुणों की यह जननी है, सबको करे निहाल
इसके आते ही मिट जाते जन्मों के जंजाल
पवित्रता के बल से जग में, सुन्दर स्वर्ग सजाओ
पवित्रता अपनाओ ··

भरा हुआ पवित्रता में, शान्ति का ख़ज़ाना
परमपिता ने यही कहा है, पवित्र बनना बनाना
इस मार्ग पे ख़ुद चलो तुम, औरों को चलाओ
पवित्रता अपनाओ···

कदम-कदम में पदम है उसके, पावन जो बन जाता
खुशियाँ उसके चर्ण की दासी, रहे सदा मुस्काता
पवित्रता की चमक से अब तो, हर मन को चमकाओ
पवित्रता अपनाओ···

# विचारों का प्रभाव

ले०—ब्र० कु० चक्रधारी

प्यारे बच्चो, आज तक आपने बहुत कहानियाँ सुनी होंगी परन्तु आज मैं आपको एक ऐसा वृत्तान्त बताती हूँ जिसे सच्ची कहानी कहा जा सकता है और जो एक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक सिद्धान्त को प्रमाणित करता है। इससे आपको यह विदित होगा कि जीवन में उमंग और उत्साह और सही विचार-धारा का क्या प्रभाव होता है।

कहते हैं कि मन के संकल्पों का मनुष्य के शरीर पर और उसके दृष्टिकोण अथवा उसके कार्य कलापों पर प्रभाव जानने के लिए एक बार कुछ डॉक्टरों ने प्रयोग (Experiment) करने का विचार किया। उन्होंने अपना ऑपरेशन थियेटर अथवा शल्य क्रिया कक्ष तैयार कर लिया और योजना बनाने लगे कि प्रयोग की रीति-नीति क्या हो ? पहले की तरह उनके पास उस दिन भी कई रोगी आये परन्तु उन्हें केवल दवाई दे देना अथवा इंजेक्शन लगा देना ही काफ़ी था। एक रोगी ऐसा आ निकला जिसकी टाँग पर एक बहुत छोटा-सा घाव था। यों उसे थोड़ी-सी मल्हम लगाकर उस पर पट्टी बाँध देना ही काफ़ी था परन्तु डॉक्टरों को तजुर्बा करना था। इसलिए जिस डॉक्टर ने उसे देखा वह उस रोगी को बोला—"यह तो बहुत खतरनाक घाव है। देखने में बड़ा छोटा परन्तु वास्तव में बहुत खोटा है। इसमें पस भर गई है और ये अपने आस-पास के जीव कोषों को ज़हरीला करता हुआ जा रहा है। मुझे डर है कि अगर तुरन्त ही शल्य चिकित्सा द्वारा इसको समाप्त न किया गया तो फिर यह सारे शरीर को विषैले रक्त द्वारा अपनी लपेट में ले लेगा। और तब हाथ पर हाथ धरने के सिवाय और कोई चारा न होगा।"

रोगी बोला—"आप जैसा उचित समझें, वैसा ही करें। मुझे भी ऐसा ही प्रतीत होता है कि यह घाव कोई साधारण नहीं वरना मैं तो ऐसा व्यक्ति हूँ कि मैं छोटे-मोटे घाव की तो परवाह ही नहीं करता।"

डॉक्टर—"आप ठीक कहते हैं। हमारी डॉक्टरी भाषा में इसे अत्यन्त हानिकर, जड़दार फोड़ा (Malignant Tumor) कहते हैं। मेरी राय है कि इसका आज ही ऑपरेशन होना चाहिए। फिर भी आप ठहरिये। हमारे यहाँ विशेषज्ञ डॉक्टरों का एक बोर्ड (संगठन) है, उनका परामर्श ले लें।"

यह कहते हुए डॉक्टर रोगी के चेहरे की ओर देखता जा रहा था। उसका रंग उड़ता जा रहा था और वह नर्वस (Nervous) होता हुआ दिखाई दे रहा था।

बात को जारी रखते हुए डॉक्टर ने कहा—घबराइये नहीं। आज विज्ञान ने ऐसी-ऐसी दवाइयाँ उपलब्ध करा दी हैं और शल्य चिकित्सा इतनी विकसित हो चुकी है कि इस रोग का निदान निश्चय ही हमारे पास है।

ये आश्वासन के शब्द सुनकर रोगी की आँखों में कुछ चमक लौट आई। परन्तु वह अवाक् खड़ा था।

डॉक्टर ने कहा—मैं और रोगी बाद में देखूंगा। पहले आपको मैडीकल बोर्ड में ले चलता हूँ। उसने घण्टी बजाई और अपनी 'कोड' (Code) भाषा में एक चिट लिखकर पास वाले कमरे में जिसके बाहर चार विशेषज्ञों के, बड़ी-बड़ी उपाधियों सहित, नामों का बोर्ड लिखा था, अन्दर भेज दी।

इन्टरकॉम की घण्टी बजी। शायद बोर्ड के यहाँ से यह कहा जा रहा था कि रोगी को लाया जा सकता है। डॉक्टर रोगी को बोर्ड के सामने ले गया और सबने अपने-अपने तरीके से उस घाव को देखा और

उस रोगी से कुछ प्रश्न भी पूछे। आपस में एक-दूसरे की ओर देखते हुए उन्होंने डाक्टरी भाषा में कुछ निर्णय किया और डॉक्टर रोगी को वापस ले आया। उसने उसके नुस्खे पर लिख दिया—इमिडियेट ऑपरेशन (तुरन्त शल्य-क्रिया)।

रोगी ने कहा—"मैं अभी घर जाकर इतला देता हूँ और शीघ्र ही वापस लौटकर आता हूँ।" डॉक्टर ने कहा—"फिर ये डॉक्टर चले जायेंगे और आज यह ऑपरेशन नहीं हो सकेगा परन्तु आज ही इसका ऑपरेशन होना ज़रूरी है।"

मरीज़ को ऑपरेशत थियेटर में ले जाकर लिटा दिया गया। उसे इंजेक्शन लगाकर बेहोश कर दिया और घाव के पास बहुत मामूली-सा चीरकर घाव के दोनों ओर काफी दूर-दूर तक पट्टी बाँध दी गई ताकि ऐसा लगे कि काफी बड़ा ऑपरेशन हुआ है कुछ समय के बाद रोगी होश में आया और जब उसकी आँखें खुली तो वह अपनी टाँग पर की गई पट्टी को देखकर ऐसा कराहने लगा जैसे कि उसका बहुत बड़ा ऑपरेशन हुआ होने से उसे दर्द हो रहा हो।

इसी बीच डॉक्टरों ने पहले से ही एक चिलमची में रक्त के जैसा लाल पानी भरकर उसकी शैया के नीचे रख दिया था। डॉक्टर ने पहले तो रोगी को मुबारिक दी कि उसका ऑपरेशन ठीक हो गया है और फिर उसने चिलमची की ओर इशारा करते हुए कहा—"यह देखिये कितना खून निकला है। निकलना ही था क्योंकि यह बड़ा ऑपरेशन था परन्तु आप भाग्यशाली हैं कि खतरनाक ऑपरेशन ठीक हो गया है। अच्छा, अब थोड़ा उठकर इसी कमरे में ही चलिए ताकि आपके रक्त का दौरा टाँगों में ठीक तरह से हो। ऐसे ऑपरेशन के बाद यह ज़रूरी होता है।"

रोगी ने कहा—"डॉक्टर, आप ज़रा सोचिए तो सही कि आप कैसी असम्भव बात कह रहे हैं। जिसका इतना खून निकला हो वह तो कई दिन तक चारपाई से उठ भी नहीं सकेगा, चलने की तो बात ही छोड़ दीजिए। ऊँ हुँ···ऊँ···हुँ···डॉक्टर, बड़ी कमज़ोरी महसूस हो रही है, कोई ताकत की दवाई दे दीजिए। देखिए न, लगभग डेढ़ फुट ऑपरेशन हुआ है। यह तो मैं ही मज़बूत और तवाना आदमी हूँ जो बच गया हूँ वरना इतने बड़े ऑपरेशन से बचना हरेक की हिम्मत से बाहर है। ऊँ हुँ···"

एक मिनट रुककर डॉक्टर ने रोगी को कहा—"देखिए, अगर आप सुनने के लिए तैयार हो तो अब मैं आपको सही किस्सा बताता हूँ। पहले वायदा करो कि आप बुरा नहीं मानोगे।"

रोगी—"नहीं, नहीं बुरा मानने की क्या बात है। डॉक्टर साहब, आपने तो मेरा जीवन बचाया है।"

डॉक्टर—"अच्छा, तो आपको मालूम होना चाहिए कि वास्तव में आपका इतना बड़ा ऑपरेशन नहीं हुआ। हमने तो एक प्रयोग करने के भाव से यह सब स्वाँग रचा था, अथवा नाटक किया था। हम देखना चाहते थे कि मनुष्य के विचारों का, उसके उत्साह का उसके शरीर और कार्य-कलापों पर क्या प्रभाव पड़ता है। आप जैसे अनेक रोगियों के इलाज के लिए यह ज़रूरी था कि हमें और बाद में आने वाले डॉक्टरों को यह प्रयोगात्मक ज्ञान हो। अतः आप धन्यवाद के पात्र हैं कि रोगी सेवा के लिए आवश्यक जानकारी के प्रयोग में आपने हमें सहयोग दिया। आपका ज़ख्म वास्तव में मामूली किस्म का ज़ख्म है, उसके लिए ऑपरेशन का तो प्रश्न ही नहीं उठता। हमने उसे मरहम तो लगा ही दी है और इतनी बड़ी पट्टी तो हमने इसलिए बाँधी थी कि हम जान सकें कि इसे देखकर आप पर क्या प्रभाव पड़ता है। वास्तव में अब आप वैसे ही हैं जैसे ऑपरेशन से पहले थे। हमने आपके खून का एक कतरा भी नहीं लिया। आपकी चारपाई के नीचे जो चिलमची रखी है, उसमें लाल रंग का द्रव्य खून नहीं है, यह तो लाल दवाई से रंगा गया पानी है। समझा आपने। अब आप बखुशी घर जा सकते हैं क्योंकि वे लोग आपका इन्तज़ार करते होंगे।"

यह कहते समय डॉक्टर रोगी के चेहरे को देख रहा था। उसमें जोश, आक्रोश और शक्ति का संचार होता मालूम हो रहा था। यद्यपि वह कुछ बोल नहीं रहा था परन्तु भौचक्का और हैरान था तथा कुछ नाराज़ भी।

रोगी बोला—"अच्छा तो आपने यह पट्टी यूँ ही बाँध रखी है। क्या तमाशा है! डाक्टर साहब, आपने प्रयोग नहीं, ख़तरनाक मज़ाक किया है। ज़रा खोलिये तो इस पट्टी को, अभी मालूम हो जाएगा। यह कहते हुए वह चारपाई से उठकर झटके से बैठ गया और डॉक्टर को गुस्से भरी आँखों से देखने लगा।"

डॉक्टर उसकी ओर आगे बढ़ा और सहमा हुआ सा खड़ा होकर उसकी पट्टी खोलता गया। मुस्कराकर उसके सिर पर हाथ रखकर बोला—"भगवान आपकी आयु लम्बी करे और आप सदा स्वस्थ रहें। विश्व के रोगियों के निमित्त आपके योगदान के लिए धन्यवाद!"

रोगी इसके उत्तर में कुछ न बोला। वह झटके से उठकर चप्पल पहनकर, एक तेज़ हवा के झोंके की तरह अथवा तीर की तरह कमरे से बाहर निकल गया। कुछ समय पहले जो दर्द से कराह रहा था और उठने के लिए भी असमर्थता प्रगट कर रहा था अब उसमें वेग और उत्साह आ गया था—ऐसा प्रभाव होता है विचारों का।

अतः बच्चो, सदा जीवन में उमंग और उत्साह बनाये रखना और शुभ विचारों तथा गुण-चिन्तन में लगे रहना क्योंकि उल्टे विचारों (Negative thinking) का शरीर पर और कार्य-कलापों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

# ये अद्‌भुत, अलौकिक संस्थान

## रामपाल उपाध्याय, राज्य मन्त्री, राजस्थान

**माउण्ट आबू**—"इस अद्‌भुत अलौकिक व आत्मा को परम उल्लास देने वाले संस्थान को देखकर मन को शान्ति का आभास हुआ।" यह विचार आबू पर्वत स्थित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा बनाये गये आध्यात्मिक संग्रहालय का अवलोकन करने के पश्चात भ्राता रामपाल उपाध्याय राजस्थान के सहकारिता राज्य मन्त्री जी ने प्रगट किया। और उन्होंने बताया कि जीव आत्मा तथा परम शक्ति ज्योति पुँज का प्रतीकात्मक चित्रांकन कुछ आध्यात्मिक ध्यान करने को उत्साहित करता है। यह संस्थान तड़पती हुई मानवता को सुख की साँस दिलाने का महान कार्य कर रहा है। अन्त में बताया कि मैं इसके भविष्य वृद्धि की हार्दिक शुभ कामना करता हूँ। आपने अपनी धर्म-पत्नि जी के साथ संग्रहालय देखने के बाद ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय का भी अवलोकन करके यहाँ की गतिविधियों की जानकारी ली। तथा ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणी जी एवं अतिरिक्त प्रशासिका ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी जी से भी भेंट वार्ता की। दादी प्रकाशमणी जी ने मन्त्री महोदय जी को बताया कि सच्ची सहकारिता तब हो सकती है जब मानव अपने जाति-भेद, भाषा-भेद, अमीरी-गरीबी के अन्तर से ऊपर उठकर अपने को एक प्रभू की सन्तान आत्मा समझें। इसी सत्य विश्वास पर अटल रहने से दुनिया की सर्व समस्यायें हल हो सकती हैं। यही कार्य आज दुनिया-भर में लाखों ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ कर रही हैं।

ब्र० कु० करुना

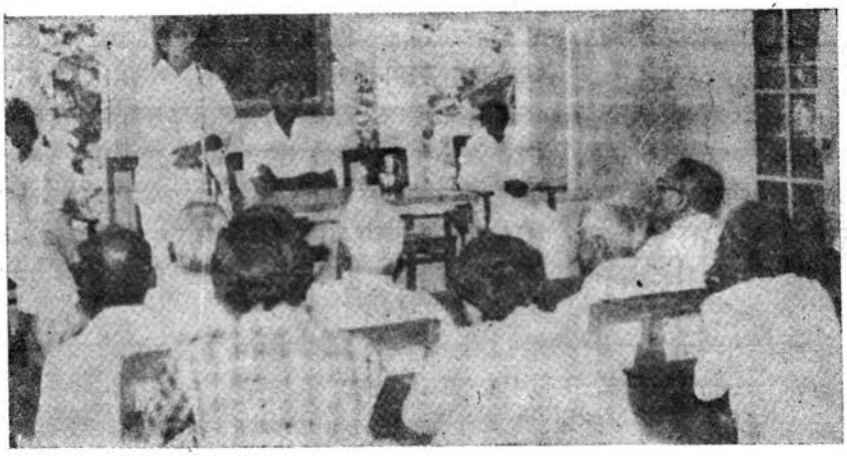

← सोलापुर वाडिया हॉस्पिटल में डॉक्टरों के प्रोग्राम में "राज-योग—एक रामबाण औषधि" इस विषय पर ब्र० कु० ऊषा बहन भाषण करते हुए दिखाई दे रही हैं। साथ में ब्र० कु० रमेश, ब्र० कु० सोमप्रभा इत्यादि दिखाई दे रहे हैं।

राँची आध्यात्मिक प्रदर्शनी का→ उद्घाटन बिहार सरकार पशु-पालन विभाग के राज्यमंत्री भ्राता शंकर प्रताप देव जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। उनके साथ ही एम० एल० सी० और अध्यक्ष ज़िला काँग्रेस कमेटी राँची भ्राता सत्य-देव नारायण तिवारी, गल्ले के प्रसिद्ध व्यापारी लक्ष्मी नारायण, ब्र० कु० निर्मला द्रोपदी जी खड़े हैं।

←धार नगर में "विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी" का ज़िला एवं सत्र न्यायाधीश माननीय मुरारी लाल जी तिवारी दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घा-टन करते हुए, पास में ब्र० कु० आशा, ब्र० कु० पुष्पा व तारामाता मूले दिखाई दे रही हैं।

# प्रस्ताव प्रतियोगिता परिणाम

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विद्यालय, माउंट आबू तथा तिरुपति तिरुमाला देवस्थानम्, तिरुपति ने मिलकर 'प्राचीन भारत का गौरव' विषय पर प्रस्ताव प्रतियोगिता का आयोजन किया था। प्रस्ताव प्रतियोगिता के विषय निम्नलिखित थे—

१. विश्व सभ्यता का आधार प्राचीन भारत।
२. आर्य, उनकी मूलभूत उत्पत्ति, प्रारम्भिक इतिहास व सभ्यता।
३. प्राचीन भारत के देवी-देवताओं का सच्चा इतिहास।
४. सभ्यता का आदि—स्वर्णयुग या पत्थरयुग ?
५. प्राचीन मानव के पूर्वज—देवी - देवता या बन्दर ?

संयुक्त संयोजकों ने निम्नलिखित चार निर्णायकों के नाम चुने थे—

१. प्रो० डॉ० ई० आर श्रीकृष्ण शर्मा, तिरुपति।
२. प्रो० डॉ० एम० डी० बाला सुब्राह्मणयम, तिरूपति।
३. ब्र० कु० जगदीश चन्द्र हसीजा, दिल्ली।
४. भ्राता रमेश नंदलाल शाह, बम्बई।

सभी प्रस्तावों को विस्तारपूर्वक अध्ययन करने के पश्चात् सुशिक्षित निर्णायकों की कमेटी ने एकमत से यह निर्णय दिया कि किसी भी प्रस्ताव लेखक को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा तीन सांत्वना पुरस्कार न दिए जाएँ। परन्तु फिर भी प्रतियोगिता में भाग लेने वालों द्वारा किए प्रयासों को दृष्टिगोचर रखते हुए, निर्णायकों ने यह निर्णय किया कि दस प्रस्ताव चुनकर कुल १९७५० रुपए के पुरस्कार वितरण किए जाएँ और यह भी निर्णय किया गया है कि प्रत्येक को २००० रुपए नकद पुरस्कार दिया जाए। प्रस्ताव प्रतियोगिता के संयोजकों ने निर्णायकों के निर्णय को स्वीकृति दे दी है। पुरस्कार विजेताओं की सूची निम्नलिखित है—

१. भ्राता नंद किशोर आनंद, जालंधर।
२. डॉ० चक्रवर्ती, बी० सी०, दिल्ली।
३. भ्राता कृष्णास्वामी, सिकन्द्राबाद।
४. भ्राता देवदत्त लगवाल, भावनगर।
५. भ्राता बसंत सदाशिव नरगोलकर, कैनाड।
६. भ्राता चन्द्रभानु पटनायक, भुवनेश्वर।
७. भ्राता के० राधाकृष्णन, अनन्तपुर।
८. भ्राता विष्णु रामचन्द्र रौत, अकोला।
९. भ्राता सुरेन्द्र कुमार विनायक, नई दिल्ली।
१०. भ्राता सी० वेंकटेश्वर, सत्यनारायणपुरम्।

पारितोषिक वितरणोत्सव का आयोजन शीघ्र ही तिरुपति में किया जाएगा, जिसके लिए पुरस्कार विजेताओं को उचित समय पर निमंत्रण-पत्र भेज दिए जाएँगे।

ब्र० कु० बृज इन्द्रा
प्रमुख संयोजक तथा
ज़ोन इंचार्ज, महाराष्ट्र
१९, नरोत्तम निवास, सायन
बम्बई—४०००१९, फोन : ४७३०१५

दार्जिलिंग में म्युनिसिपल चैम्बर में चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी के उद्घाटन फंक्शन में जनक लाल वकील मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रगट कर रहे हैं साथ में ब्र० कु० स्वदर्शन झमरूमल व हनुमान जी अग्रवाल बैठे हैं।

# "सहज योगी और सहज जीवन"

ब्र० कु० योगीराज, मधुबन, माउण्ट आबू

जीवन की सरलता किसी भी प्राणी की सर्व प्रथम आवश्यकता है। सरल जीवन में ही सुख-शान्ति की लताएँ शोभित होती हैं। सरल जीवन में ही गुणों के गुल चमकते हैं। सरल जीवन ही अतीन्द्रिय सुखों का कारण है। मनुष्य जीवन प्राप्त करके भी अगर कोई प्राणी जीवन से परेशान हो, जीवन की गाड़ी को अशान्ति के पहियों पर जबरदस्ती खींच रहा हो तो वह जीवन भी क्या है!

इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर योगेश्वर ने योग को सरल बनाकर प्रस्तुत किया। इतना ही नहीं, जब से कोई आत्मा उसका बने, जब से किसी ने कहा—"कि शिव बाबा, मैं तेरा"। तो बाबा की ओर से मधर बोल गुँजारित हुए, "बच्चे, मैं तेरा"। अर्थात् सहज-योगी भव का वरदान प्राप्त हो गया। स्वयं भगवान ने वरदान दिया कि मैं हर समय तुम्हारे साथ हूँगा। मेरी मदद तुम्हें हर समय प्राप्त होगी। और जिन आत्माओं को इस वरदान की स्मृति दृढ़ हो गई वे सहज योगी बन गये।

किसी भी मनुष्य की सफलता या असफलता, महावीरता या कमजोरी हार या जीत, महानता या साधारणता का आधार स्मृति (Conscious) ही है। किसी को अगर यह स्मृति दृढ़ है कि मैं महान हूँ तो महानता उसके हर कर्म व कर्मेन्द्री पर अपनो छाप छोड़ने लगेगी। अगर कोई यह ही समझ बैठा है कि मैं तो कमजोर हूँ तो हार और निराशा ही हर कदम में उसका वरण करेगी। तो परमपिता के वरदानों की स्मृति ही योग-अभ्यास को सरल व स्वाभाविक कर देती है।

जैसे—किसी भगवान के पुत्र को अगर यह स्मृति है कि मैं सर्वशक्तिवान की सन्तान, सर्व-शक्तियों से सम्पन्न आत्मा हूँ। यह स्मृति उसे अति शक्तिशाली बना देती है और माया को जीतना उसके लिए खेल-खेलने जैसा हो जाता है।

तो वास्तव में ये स्मृति ही जीवन की हर समस्या का हल है। जो भी समस्या मनुष्य अपने जीवन में बो लेता है, उसका कारण ही ये स्मृति की कमी है। अथवा यों कहें कि जितना जो सहज योगी होगा, उतना ही उसका जीवन भी सहज होगा। जीवन उसे अति प्यारा लगेगा और वास्तव में तो वह अपने जीवन को देवताओं से भी अच्छा अनुभव करेगा।

परन्तु यदि किसी आत्मा के लिए योग स्वयं ही एक समस्या हो तो निःसन्देह उसके लिए समस्याओं के घेरे से निकलना पैदल सागर पार करने जैसा लगेगा। और वह बार-बार स्वयं को जीवन से हारा हुआ महसूस करेगा। क्योंकि कलियुग में जीवन स्वयं ही एक युद्ध है, इसमें जिस साहस की आवश्यकता होती है, वह साहस योग की श्रेष्ठ सिद्धि है। परन्तु अगर किसी के लिए योग भी एक नया युद्ध बन गया हो तो इस द्वियुद्ध के जीवन को सरल बनाना फिर हवाई किले बनाने जैसा ही रह जायेगा।

मनुष्य के जीवन पथ पर जब अनेक बार निराशाओं के बादल मण्डराने लगते हैं, तो उसे मंजिल बड़ी दूर नजर आती है। विभिन्न सम्बन्ध व सम्पर्कों से प्राप्त हुई उदासी उसे ईश्वरीय सुखों से किनारा करा देती है। मन की व्यर्थ उलझनें और चिता-सी चिन्ताएँ राहों में काँटे बिछा देती हैं। और असीम सुखों की कल्पना से यात्रा प्रारम्भ करने वाला राही आँख मूँदकर बैठ जाता है। परन्तु सहज योग इन सबका हल है। योग आशाओं के चिराग जलाता है। और एक महान दृष्टिकोण प्रदान करता है जिससे छोटे-मोटे विघ्न मनुष्य को निरुत्साहित नहीं करते।

योग अभ्यासी आत्माएं इस बात के अच्छी तरह

अनुभवी हैं कि जहाँ "मैं-पन" आता है, मन भारी हो जाता है। "क्या होगा" का भय दु:खी कर देता है। और उसी स्थान पर शिव बाबा की यादें जीवन को हल्का करके खुशियों की दुनिया में ले जाती हैं।

सहज योग खुद ही सहज जीवन है। प्रात:काल से ही हम अपनी जीवन रूपी गाड़ी को सहज योग की पटरी पर सैट करें। तो जीवन की सरलता का सुख सारे दिन प्राप्त होगा। यह देखा गया कि अमृतवेले योग की सरलता व सहजयोग की भावना सारे दिन को सुखी व विघ्न विहीन कर देती है। परन्तु इसके लिए इस अमूल्य समय में आत्मा को पूर्ण सन्तुष्ट करना होगा।

मनुष्य के मन की असहयोग की भावना भी उसके जीवन को क्लिष्ट करती है। अगर मन से दूसरों को शुभ-भावनाओं व श्रेष्ठ कामनाओं का सहयोग दिया जाए तो मन की व्यर्थ की उलझन स्वत: ही समाप्त हो जाती है। इस ईश्वरीय जीवन में अगर किसी आत्मा ने शुभ भावनाओं का खजाना पूर्णत: भरपूर किया हो तो उसके खजाने चारों युगों में भरपूर रहेंगे। और उसे ही जीवन की सरलता का सही आनन्द प्राप्त हो सकेगा।

जब कभी किसी मनुष्य को अकेलेपन की अनुभूति होती है तो वह जीवन को बहुत ही बोझिल महसूस करता है। परन्तु सहजयोगी को जीवन में कभी भी अकेलापन नहीं भासता। भगवान का साथ व ईश्वरीय परिवार का स्नेह उसके मन को सुखों से भरपूर रखता है। परन्तु मनुष्य विनाशी देहधारियों से क्षणिक प्रीत जोड़कर यों ही जीवन को बोझिल करता रहता है। जबकि उसे पता है कि मानव-प्रेम स्थाई नहीं होता। और इसी कारण उसे दु:ख की प्राप्ति होती है। परन्तु मानव के तत्कालीन प्यार में पड़कर कहीं-कहीं, कोई-कोई आत्मा स्वयं के भविष्य को अंधकार में धकेल देती है और जीवन में जन्म-जन्म की अशान्ति के बीज बो लेती है।

मनुष्य के जीवन में अनेक बार ऐसे भी क्षण आते हैं जबकि वह चाहता है कि उसे कोई प्यार करे, कोई उसे मन को चैन देने वाला वचन कहे, कोई उसे सहारा दे। जीवन की लम्बी यात्रा में, हार-जीत के इस द्वन्द्व में ऐसे क्षण आ सकते हैं। परन्तु सहज योगी आत्मा को ईश्वरीय प्यार की सूक्ष्म अनुभूति इतना तृप्त रखती है कि वह प्यार का भिखारी नहीं बल्कि प्यार का दाता बन जाता है। अत: हमें सहज योग द्वारा ईश्वरीय प्यार के पात्र बन जाना चाहिए, तब ही हमारी जीवन की राहें आशा भरी, सुख भरी, व प्रेम भरी होंगी।

बहुत बार, कई मनुष्य यों ही अपने लक्ष्य से विचलित होकर समस्याओं का आह्वान करके, "आ रे बैल मुझे मार" वाली कहावत को चरितार्थ करते हैं। जिन बातों से हमें कुछ लेना-देना नहीं उनमें हम क्यों अटक जाएँ। इस संगमयुग पर हम यह न भूलें कि हमारा मार्ग पूर्णतया 'आध्यात्म' है। हमें लौकिक तौर-तरीके अपनाकर अपने जीवन की सरल राहों में पत्थर नहीं बिछा लेने चाहिए। नहीं तो फिर उन पत्थरों को साफ करते-करते ही हमारे जीवन की ये अनमोल घड़ियाँ बीत जाएँगी।

सहज योग में जहाँ अन्तर्मुखता जीवन पथ को सरल करती है, वहीं साथ-साथ रमणीकता का पुट भी जीवन की सरलता के लिए आवश्यक अंग है। जो आत्मा को चिड़चिड़ा होने से बचाता है व जीवन में टकराव की स्थिति नहीं पैदा होने देता। रमणीक स्वभाव भी व्यर्थ संकल्पों से सहज ही मनुष्य को बचा देता है। केवल गम्भीर जीवन लोकप्रिय नहीं होता जब तक हर्षित स्वभाव की चमक उसमें न हो।

तो आओ, हम सभी जीवन की इस लम्बी यात्रा में हँसते गाते चलें। दूसरों को सुख देने वाले कभी दु:खी नहीं होते। जो दूसरों की शान्ति भंग नहीं करते वे चिर शान्ति के अधिकारी होते हैं। अत: अपने जीवन को सहज बनाने के इच्छुक आत्माओं को, दूसरों के जीवन की सरलता को भंग न करने को विशेष महत्व देना चाहिए।

सहज योग के अभ्यासी को ये धारणाएँ वरदान के रूप में प्राप्त हो जाती हैं। अपने योग को सहज बनाने के लिए हर कर्म को सहज रूप दे देने की कला

को जानना परम आवश्यक है। कर्म के परिणाम की चिन्ता, कर्म में बुद्धि योग को समाप्त कर देती है। सम्पर्क में स्वभाव की सरलता, योग को व जीवन को सरल बना देती है। तथा दूसरों की उन्नति में सह-योगी बनना, दूसरों की श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शना करना— इससे प्राप्त सूक्ष्म आशीर्वाद हमारे जीवन को सुखद व सरस कर देता है।

जीवन को सरल करने के लिए विचारों को सरल करना होगा। हमारा सोचना ही सरल स्वरूप का हो। मन को भारी करने वाले विचार हम जीवन से छोड़ते जाएँ। और यह सब होगा, ज्ञान को पूर्णतया मथकर, मक्खन बुद्धि में भर देने से। तब ही ज्ञान का मक्खन मन को ताजगी देता रहेगा। नहीं तो मनुष्य का व्यर्थ का अहंकार उसे यों ही परेशान किये रहता है। मनुष्य खुद ही अपना जाल बुनकर उसमें उलझा रहता है। तो अगर मनुष्य विचारों को व इच्छाओं को ही सरल कर दे तो फिर जीवन के इस खेल में उसे अत्याधिक आनन्द प्राप्त होगा।

शिव बाबा ने हमें सारा ज्ञान जीवन को सरल बनाने के लिए ही तो दिया है। ज्ञान के बाद भी अगर जीवन कठिन लगता है तो जीवन की सरलता का अनुभव कब होगा ? और उससे भी महान फ़रिश्ता स्वरूप में कब स्थित होंगे। अतः अगर किसी आत्मा का इस संगमयुग में सहज योग होगा तो वर्तमान व भविष्य में सहज जीवन का आनन्द उसे स्वतः ही प्राप्त होगा।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि मन में सभी के प्रति सत्कार व स्नेह की भावना तथा सुख स्वरूप द्वारा सहयोग की कामना हमारे योग व जीवन दोनों को सरल करती है। पहले हमें योग को सरल रूप देना चाहिए फिर जीवन स्वतः ही सरल हो जायेगा। और यह बात समाप्त हो जायेगी कि हमें जीवन में बहुत सहन करना पड़ता है। ▭

## भ्रमित विचार और निश्चित विनाश

आज परलोक की ओर किसी का ध्यान नहीं है। चारों ओर ऐहिकता की ही प्रधानता है। आज लोगों की यही मनसा रहती है कि इस लोक से जो सध सके साध लिया जाय, ब्रह्म लोक नाम की कोई वस्तु नहीं। वे कहते हैं कि आत्मा ही परमात्मा है। "लौकिक सुख ही जीवन का चरम लक्ष्य है," "मानव जीवन के लिए अर्थ और काम दो ही पुरुषार्थ हैं" आदि-आदि प्रकार के भ्रमित विचार आज बल पकड़ रहे हैं। सभी परतन्त्र हो गए हैं। देह-अभिमान में मदहोश मनुष्यों ने सच्चे धर्म को जीवन-व्यवहार से बिल्कुल ही अलग रख दिया है। आध्यात्मिक सुख से परे आज मनुष्य क्षणिक सुख की साधना तथा भोगना के लिए अपना अमूल्य जीवन नष्ट कर रहा है। कर्मों से मनुष्य राक्षसों के समान है। देह-अभिमान ने हृदय तथा आत्मा को पंगू कर दिया है। सत्य और असत्य के विश्लेषण में कलियुगी मानव की बुद्धि असमर्थ है। इससे बढ़कर घोर कलियुग क्या होगा ?

अपवित्रता को आँखों में रख कैसे होगा ज्ञान-दर्शन ? यह तथ्य तो मनुष्य की कल्पना शक्ति से भी परे है कि किस तीव्रता से इस आसुरी सृष्टि का विनाश निकट आ रहा है। क्या विज्ञान सेवक से स्वामी नहीं बन गया है ? क्या विज्ञान के सामने आज का सभ्य कहलाने वाला मनुष्य अपने-आपको बेबस नहीं पा रहा है ? क्या विश्व पर फिर से महायुद्ध के बादल नहीं घिर आये ? क्या इससे भी भिन्न कोई दूसरा प्रमाण आने वाले विनाश को सिद्ध करने के लिए आवश्यक है ? ▭

# श्रीकृष्ण फिर कब आयेंगे ?

सतयुग (स्वर्ग) का पहला राजकुमार

भारत में भ्रष्टाचार, विकार, दुःख और धर्म-ग्लानि को देखकर, भारतवासी श्रीकृष्ण के पुनः प्रगट होने की आशा रखते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि गीता में उन्हीं के महावाक्य हैं कि मै धर्म-ग्लानि के समय फिर आऊँगा।

भारतवासियों को यह मालूम नहीं कि इस कलि-युगी, अपवित्र एवं भ्रष्टाचारी सृष्टि में देवता अपना पाँव भी नहीं रख सकते हैं। श्रीकृष्ण-जैसी श्रेष्ठ देवात्मा के लिए तो प्रकृति, पदार्थ और प्रजा सभी पवित्र एवं सतोप्रधान चाहिए। अतः श्रीकृष्ण तो वास्तव में सतयुग के आरम्भ में जन्म लेते और विश्व पर राज्य करते हैं। उन्हें स्वयंवर के पश्चात् 'श्रीनारायण' कहते हैं और श्रीराधे को श्री लक्ष्मी कहते हैं, जैसे कि त्रेतायुग में जानकी जी को स्वयंवर के पश्चात् श्री सीता जी कहते हैं। श्रीकृष्ण के समय की पूर्ण पावन एवं पूर्ण सुखी सतयुगी सृष्टि को भी सुखधाम अथवा वैकुण्ठ कहा जाता है।

वास्तव में गीता में यह जो महावाक्य हैं कि "मैं धर्म-ग्लानि के समय अवतरित होता हूँ, ये अशरीरी परमपिता परमात्मा ज्योति-बिन्दु शिव के हैं। वह ही हर कल्प के अन्त में प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर आदि सनातन, श्रेष्ठाचारी देवी-देवता धर्म की पुनः स्थापना कराते हैं और महादेव शंकर के द्वारा मनुष्यों को महाभारत-प्रसिद्ध विश्व-युद्ध के लिए प्रेरित कर अधर्म का और भ्रष्टाचारी सृष्टि का महाविनाश कराते हैं। इस प्रकार जब पाप का अन्त और श्रेष्ठाचार की पुनः स्थापना हो जाती है, तभी विष्णु के साकार रूप श्रीकृष्ण (श्री नारायण) जन्म लेकर पालना करते हैं। अब भगवान् शिव अपने दोनों ईश्वरीय कर्त्तव्य प्रजापिता ब्रह्मा और महादेव शंकर द्वारा करा रहे हैं और निकट भविष्य में होने वाले ऐटामिक विश्व-युद्ध और महाविनाश के बाद सतयुगी सृष्टि के आरम्भ में पुनः श्रीकृष्ण आने वाले हैं। □

जगनाथ पुरी में एक महिला कालेज में गजापति महाराजा दिव्य सिन्हा देव एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन टेप काट कर रहे हैं ब्र० कु० निरुपमा व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

# रक्षा-बन्धन पवित्रता और प्रेम का प्रतीक

ब्र० कु० आशा, भीलवाड़ा (राजस्थान)

क्यों, कब, कहाँ, क्या=सत्य। चूंकि वर्तमान युग वैज्ञानिक युग हैं। अतः हर बात की सत्यता के लिए कब, क्यों, कहाँ, किसने और कैसे के निष्कर्ष ही को विज्ञान कहा गया है। वास्तव में हर परम्परा व वस्तु की उत्पत्ति अथवा प्रचलन के पीछे कोई न कोई गहरा रहस्य छुपा हुआ होता है। 'रक्षा-बन्धन' को 'राखी बाँधना' भी कहा जाता है। **'राखी बाँधना' एक मुहावरा** भी है और जिसका भावार्थ है—**अपना बनाना**। मेवाड़ की रक्षा करने हेतु महारानी कर्णवती ने जब सर्वप्रथम मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेजी तो—पूर्व तो बादशाह ने आनाकानी की। किन्तु जब बादशाह को यह आभास हुआ कि भारतीय परम्परा में राखी **पवित्रता और प्रेम** का प्रतीक है। हिन्दू-मुस्लिम ये जातियाँ मानव-शरीर में प्रवेश के बाद हैं, किन्तु इसके पूर्व वास्तविक स्वरूप में हमारा एक ईश्वरीय सम्बन्ध है। हम सब रूहें हैं, और रूहानियत के तौर पर भाई-बहन का हमारा आपसी सम्बन्ध है। अतः बादशाह ने प्रेम (राखी) का बदला चुकाने हेतु खुशी-खुशी ससम्मान उसी परम्परा से राखी बँधवायी जैसे एक हिन्दू पुरुष। राखी बँधवाकर बादशाह ने तुरन्त सेना तैयार की और मेवाड़ की रक्षा के लिए कूच किया। किन्तु समय की देरी के कारण दुश्मन ने विजय प्राप्त कर ली थी, और रानी कर्णावती चिता में समा चुकी थी। यह समाचार सुनकर बादशाह का हृदय विदीर्ण हो उठा, और वह फूट-फूटकर रोने लगा कि मैं समय पर नहीं पहुँच पाने के कारण अपनी बहन की रक्षा नहीं कर पाया, उसे राखी का बदला नहीं चुका पाया।

इतिहास के ऐसे कई पन्ने गौरवमयी परम्परा को छापे हुए हैं, जिनसे रक्षा-बन्धन के महत्व को परखा जा सकता है। मूल रूप में राखी—है ही पवित्रता और प्रेम का प्रतीक। चूंकि सृष्टि का रचयिता अथवा बीज एक परमात्मा है। और उसने सर्व-आत्माओं को अपने सर्व-सम्बन्धों के बन्धन में बाँधकर अपना बनाया है। अतः सर्वप्रथम रक्षा-बन्धन की उत्पत्ति परमात्मा द्वारा एक प्रेम और पवित्रता के लिए सृष्टि के आदि समय पर हुई।

साकार सृष्टि में मानव-कल्याण एवं सृष्टि के पुनर्निर्माण के साथ-साथ शैतान से सज्जनों की रक्षा करने हेतु सर्वप्रथम परमात्मा शिव ने साकार प्रजापिता ब्रह्मा को राखी बाँधी अर्थात् अपना बनाया। तत्पश्चात् पवित्रता और प्रेम के सूत्र से ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों एवं ब्राह्मणियों को राखी बाँधने अर्थात् अपना बनाने का महोत्सव प्रारम्भ किया गया। रक्षा-बन्धन को विश्व-शान्ति महोत्सव भी कह सकते हैं। रक्षा-बन्धन देह-जाति-धर्म और राष्ट्र के सभी मतभेदों को समाप्त कर एक सूत्र में बाँधता है। अतः यदि रक्षा-बन्धन के महत्व को समझकर सभी धर्मावलम्बी-सभी राष्ट्र रक्षा-बन्धन का उत्सव मनाएँ, तो पूरी सृष्टि पर राम-राज्य की स्थापना हो सकती है। फिर विश्व-शान्ति के लिए सम्मेलन अथवा अन्य किसी प्रकार के आन्दोलन करने की आवश्यकता नहीं। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम सब मिलकर आह्वान करें—**रक्षा-बन्धन पवित्रता, प्रेम, विश्व शान्ति, एकता विश्व सम्पन्नता का प्रतीक है।**

**राखी बंधवाइये, पवित्रता अपनाइये**

# "पांच शत्रुओं को मित्र बनाओ"

ले० ब्र० कु० अरुण, बर्मन

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार यह पाँच विकार जिसमें आज का मानव पूरी तरह से लिप्त है, वास्तव में यह एक प्रकार की भूख है। यदि हम अपने अन्दर से उठने वाली हरेक माँग पर विचार करें तो वह सारी की सारी उचित है तथा उसका संतुलित ढंग से प्रयोग किया जाए तो वह हमें मानव से देव बनाने के लिए ही उदय होती हैं किन्तु अज्ञान के कारण हम उन्हें उनकी उस शक्तियों को नहीं पहचान पाते तथा उनका प्रयोग कर तो लेते हैं लेकिन बिलकुल विपरीत दिशा में। इसका परिणाम पतन होता है। आज के वर्तमान युग में जबकि मानव गिरती कला में है, इसका कारण ५ विकारों का गलत और उल्टा प्रयोग है, और सही प्रयोग किस तरह से हो और कैसे इस प्रयोग से हम मानव से देव बन सकेंगे, कैसे प्रत्येक विकार शक्तियों में परिवर्तित होंगे इसे ध्यान से समझने का तथा समझकर धारण करने का प्रयत्न कीजिए।

### १. काम को ऊर्जा (शक्ति) में बदलो

शरीर जब अपनी यौवनावस्था में पहुँचता है और सारे अंग पुष्ट हो चुकते हैं तब रक्त वाहिनियों में तनाव से एक प्रकार की शक्ति उत्पन्न होती है जिसे अग्नि कहा जाता है, इसे कामाग्नि भी कहते हैं, यह समय काफी सावधानी का होता है, आत्मा का उत्थान और पतन इसी अग्नि के प्रयोग में निहित है। इसका प्रयोग ज्ञान चिन्तन में और बुद्धि को उस परम आत्मा की याद में लगाकर इस विकार को सार्थक किया जा सकता है। इस प्रकार यह आपकी बुद्धि को इतना सात्विक और निर्मल कर देगा कि दिन-प्रतिदिन आप पाएंगे कि आपमें असाधारण परिवर्तन आने लगे हैं, आपके परखने की शक्ति जो बुद्धि द्वारा ही होती है, निर्णय शक्ति, विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति—इन सारी शक्तियों का विकास तथा बुद्धि द्वारा इन पर स्विच लगाकर इस्तेमाल करने की विधि भी आ जाएगी। यह ऊर्जा समस्त इन्द्रियों पर शासन कर इसे अपना गुलाम बना सकती है। यदि इसे ज्ञान योग द्वारा अपने वश में कर लिया जाय तो इस विकार पर शासन कर इसे उर्ध्व गति प्रदान करने वाला ही भविष्य में शासक बन राज्याधिकारी बन सकता है इसलिए यह ब्रह्मचर्य ज्ञान की पहली सीढ़ी है, सारी प्राप्तियों की पहली शर्त है। इससे गिरने वाला ज्ञान का "ग" भी नहीं समझ सकता। काम कटारी इसे इसीलिए कहते हैं यह शरीर पर वार तो करती है किन्तु शरीर निर्माण करने वाली यह ऊर्जा शरीर के साथ-साथ आत्मा की भी हत्या कर देती है। बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो आत्मा अपनी वास्तविक पहचान भूल जाती है। परिणामतः दुःख, क्लेश, रोग से मनुष्य पीड़ित हो दुर्गति को पाता है। एक सर्वेक्षण के आधार पर विश्व में ९९% पागल खानों के पागल काम पीड़ित मनुष्य हैं। सोचिए इसका उल्टा प्रयोग विक्षिप्त बनाता है और इसी को साध के बुद्धिमान सर्वश्रेष्ठ मानवों में उच्च देव पद पाने लायक बना जा सकता है।

### २. क्रोध को क्रान्ति में बदलो

क्रोध यह विकार क्यों उत्पन्न होता है, जब आपका कुछ नुकसान हो तो जिसके द्वारा हुआ हो या खुद आपसे ही गलती से हुआ हो लेकिन अज्ञानता के कारण यह क्रोध का प्रकम्पन आप पर छा जाएगा, जिससे खून में उत्तेजना फैलने के फलस्वरूप आप विवेक खो बैठेंगे और दोहरी हानि को न्योता देंगे। क्रोध आने के कई और भी कारण हैं जैसे, अहं को ठेस पहुँचने से, हितों में बाधा आने से, आशाओं पर तुषारपात होने से, इच्छा के न पूरा होने से तथा

स्वहितों में बाधा आने से। लेकिन जरा चिन्तन करें "हमारा हित किसमें है" हमें इस बात पर क्रोध करना चाहिए कि **मैं आत्मा क्या थी लेकिन आज गिरावट में आकर क्यों इतनी पतित हो गई हूं, मुझे पता है यह कर्म बुरा है फिर मुझसे ये कर्म क्यों बार-बार हुआ जाता है, अपनी कर्म इंद्रियों को सजाएं दो जिससे वह दुबारा ऐसा कर्म न करें, जिससे आत्मा को ग्लानि हो और सारा क्रोध अपने ऊपर ही खर्च करो।** इन्सान अपना दुश्मन आप है अपना दोस्त भी आप है, इस सत्य को समझ लो तो अन्य किसी पर क्रोध आ ही नहीं सकता, बाकी आपका न तो कोई अहित कर सकता और न आपको कोई दुःख दे सकता है। लेकिन सिर्फ शर्त ये है कि **मन-वचन-कर्म से आप भी किसी को दुःख नहीं दें और न किसी का अहित करें। क्रोध को यदि क्रान्ति में बदलेंगे** तो सबसे पहले आपके जीवन में क्रान्ति होगी कि आपकी बुरी आदतें सुधरेंगी, आपसे गल्तियाँ नहीं होंगी फिर ऐसा अनुशासित व्यक्ति ही दूसरों पर शासन कर सकेगा, जिसका अपने आप पर शासन नहीं वह औरों पर क्या शासन करेगा। इसलिए खुद की प्रत्येक हरकतों पर दृष्टि रखो कि कहीं मेरी कोई बात किसी को हानि पहुँचाने वाली तो नहीं। वास्तव में क्रोध पागल-पन के सिवा कुछ नहीं लेकिन इसका परिवर्तित रूप कितना सुन्दर है, कहते हैं न "आजादी के दीवाने" जिन्होंने देश की आजादी के लिए प्राण दिये उन्हें, भी अपनी गुलामी पर क्रोध आया और दीवाने हुए और आजादी ली। इस प्रकार हमें भी इन्द्रियों की गुलामी से आज़ादी पानी है ताकि आत्मा स्वतंत्र हो सके। इसके लिए क्रोध को क्रान्ति बना निज पर प्रयोग कर पहले अपना कल्याण फिर अन्य आत्माओं का कल्याण होगा और यह विकार शक्ति के रूप में परि-वर्तन हो जाएगी। फिर ऐसे व्यक्ति की दृष्टि से शान्ति की धारा निकलेगी जिससे अशान्त और बेचैन आत्मा को शान्ति तथा चैन प्राप्त होगा। "शान्ति स्वरूप" बनने की यही विधि है।

### ३. लोभ को स्वहितार्थ नहीं परमार्थ में बदलो

लोभ दुःख की जननी है, यह हवस ऐसी है कि पूरी करते जाओ और बढ़ती जाती है, लोभी मनुष्य आँख रहते अन्धा होता है और स्वार्थ उसे सिवाय स्वहितार्थ के परमार्थ कराने नहीं देता और लोभी मनुष्य पतन की चरम सीमा पर अपने लोभ के कारण ही पहुँचता है। स्वार्थ की अधिकता उसे सबसे अलग करती जाती है, वह अपने लोभ के आगे किसी भी तथ्य को स्वीकार नहीं करता और स्वयं में उलझे रहने के कारण खिन्न तथा उद्विग्न अवस्था में अनेक पाप कर्म करता है। यदि यह लोभ प्रभु मिलन में जो हो बेइन्तहा है, तो प्रभु मिलन के लोभ में परमात्मा की सारी श्रीमत पर दौड़ते हुए उस तक पहुँचने के सारे पुरुषार्थ में उत्तरोत्तर तीव्र होता हुआ लगन में मगन रहता है और यह लोभ उसे ज्ञान सम्पदा का धनी बना देता, जो अविनाशी धन को कोई लुटेरा भी लूट नहीं सकता। यह लोभ कि "मैं देवता बन सकता हूँ" सिर्फ इस जन्म के देवता स्वरूप कर्मों के आधार पर जो परमपिता परमात्मा शिव की श्रीमत है तो यह लोभ हमें जन्म-जन्मान्तर के विकर्मों से मुक्ति दिलाकर भविष्य में राजाई दिला सकेगा, तो यह लोभ हमारे आत्म उन्नति में सहायक हुआ और वह भी जन्म-जन्मान्तर के लिए। इस तरह लोभ को वश में किया मनुष्य अपनी सारी लौकिक पारलौकिक (धन-ज्ञान) सम्पदा परमार्थिक कार्यों पर खर्च कर सर्वहितार्थ चिन्तन कर दातापन स्टेज को पाता है और यह शक्ति बन अन्य सर्व-आत्माओं को उसके सामने झुकने को बाध्य करती है तथा इस जन्म में उच्च आत्मा और भविष्य में देव पद को प्राप्त कराती है। लोभ को जीतना माया-जीत' बनना है।

### ४. "मोह" अज्ञान है इसे ज्ञान में बदलो

मोह का कारण अज्ञानता है, मनुष्य दुनिया की अस्थाई, विनाशी वस्तुओं तथा जीवों से मोह का बन्धन बाँधकर अज्ञानतावश विभिन्न दुःखों को भोगता है। उसे ज्ञान नहीं होता कि जिस शरीर में रहकर 'मैं' कहता हूँ वह भी विनाश को प्राप्त होता है तो फिर किस बात का सम्बन्ध। वह इस अविनाशी ड्रामें को न जानते हुए परमात्मा से भीख में कभी पुत्र की माँग करता है, कभी धन तो कभी स्वस्थ तन। इस तरह सदा भिखारी बन मोह विकार में तड़पता

हुआ अतृप्त हो दुनिया में शरीर छोड़ फिर नए जन्म में ऐसे ही तड़पता रहता है। यह प्रक्रिया जब तक ज्ञान से मोहजीत न बन जाए, चलती ही रहेगी, इसलिए, मोह क्यों ? और किसका ? किसलिए ? इन पर विचार कर चिन्तन द्वारा इसका जो हल निकले उसमें ही दुःख से निवृत्ति और सुखों की प्राप्ति हो सकती है। हम आत्माएँ इस सृष्टि रूपी मंच पर अपने कर्मानुसार पात्र बन अभिनय करती हैं और विश्राम कर पुनः-पुनः संस्कारों को धारण करती आती जाती रहती हैं, वह आत्मा सबसे उत्कृष्ट है जो अपने स्वरूप को नहीं भूलती, अपने अभिनय द्वारा अन्य पात्रों से उत्तम अभिनय कर सब पर अपनी याद अंकित कर जाती है। जिस तरह लौकिक ड्रामे में विभिन्न व्यक्ति कथानुसार सारे रिश्ते नाते पैदा कर ड्रामे में अभिनय द्वारा सत्यता का आभास कराते हुए दर्शकों को कभी हँसाते-रुलाते अपनी पात्रता पूर्ण कर जुदा-जुदा हो जाते हैं । उसी प्रकार यह अविनाशी ड्रामा है, इसमें लिप्त होना अर्थात् अपने स्वरूप को भूल जाना है। अपने स्वरूप को सदा स्मृति में बनाए रखने के लिए मोह को ज्ञान में बदलो। इस ड्रामे की स्मृति से ही ज्ञान में स्थिर हुआ जा सकता है और जब सर्व लौकिक सम्बन्ध ट्रस्टी रूप में परिवर्तित हो जाते हैं तो वास्तविक संबंध परमात्मा से अपने-आप जुड़ जाएंगे और उनसे सर्व सम्बन्धों का प्यार प्राप्त होगा, जो प्यार अविनाशी होगा, जो हमें स्वर्ग में सच्चा सुख तथा राज्याधिकारी बनाकर २१ जन्मों के लिए दुःखों से दूर कर देगा। अतः यह ध्यान में रहे कि मोह मूर्खों का भाव है, योगी मोह पर चिंतन कर ज्ञान रत्नों को पा सकता है।

**५. अहंकार अंधकार है, इसे प्रकाश में बदलो**

वास्तव में अहंकार अंधकार है, जैसे अंधकार में कुछ भी सुझाई नहीं देता उसी प्रकार अहंकारी को 'मैं' शब्द पर इतनी दृढ़ता होती है कि वह यह नहीं जान पाता कि 'मैं' शब्द का उच्चारण करने वाली आत्मा है, शरीर नहीं और आत्मा भी इतनी सूक्ष्म है कि दृष्टि केन्द्र से भी परे जिसे अनुभव ही किया जा सकता है। किन्तु अज्ञानी देहधारी मनुष्य अपने को देह समझ इस देहधर्म चलाने में सहायक भौतिक सम्पदा, धन, मकान, जायदाद, मोटर कार, पद प्रतिष्ठा, सुन्दर देह, इनका अहंकार कर नशे में अंधा बन आत्मा को भूल नाना प्रकार के पाप करता है। अपने अहं को ठेस न पहुँचे इसके लिए सदा सजग है। ऐसा मनुष्य अन्य का अपमान भी अपनी शान को दिखाने के लिए करता है। यह देह की भूख है और हर कोई मान, शान, पद, प्रतिष्ठा, धन-दौलत का इच्छुक होता है किन्तु यह सब कुछ प्राप्त होता है अपने को आत्मा समझने पर और अहंकार हो भी तो आत्मा का हो, क्योंकि सर्वकार्य तो आत्मा ही करती है। निर्धन से पुरुषार्थ द्वारा धनी बनने वाली आत्मा ही है तथा यह आत्मा उस परम-आत्मा की संतान है जो सब सुखों के दाता हैं, जो सर्व प्राप्तियाँ कराते हैं। उस ऊँच ते ऊँच परमात्मा के आगे हम आत्मा किस बात का अहंकार करें ? जो है सो उसका (परमात्मा) का है, मैं आत्मा पुरुषार्थ स्वरूप बन उसकी निमित्त मात्र हूँ, क्योंकि शरीर विनाशी है और शरीर के बिछड़ते वह सारी वस्तुएँ जिस पर अहंकार है बिछुड़ जाएँगी। किन्तु यहीं ट्रस्टी बन, आत्म-अभिमानी बन उनका सदुपयोग किया जाय तो यह सम्पदा अविनाशी बन जन्म-जन्म प्राप्त होती रहेगी और यह आत्मा का अहंकार ज्ञान में बदलकर **प्रकाश स्वरूप** बन जाएगा जिससे अन्य आत्माओं को राह और सहयोग प्राप्त होगा और यह सम्पत्ति खर्च करने पर वृद्धि को पाने वाली बन जावेगी और आत्मा निर्मल निर्भिमानी बन भविष्य में राज्य भागी बन जाती है। क्योंकि अपने पुरुषार्थ द्वारा पैदा किया सब कुछ अन्य निर्बल आत्माओं के उत्थान, पालन पोषण में लगाने वाला राजा के समान अन्य को प्रजा समान देखता हुआ सब कुछ देकर सुख पाता है और पाने वाला जो उसका यश-गान, कीर्ति करता है यही वरदान आत्मा अपने साथ ब्याज में तथा गुण संस्कार में ले जाती है। ऐसी उच्च आत्मा बनने का पुरुषार्थ कर प्रकाश स्वरूप बन अन्य आत्माओं के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

उपरोक्त पाँचों विकारों को बदलने वाला उन पर अंकुश लगा शासन करने वाला ही वर्तमान में भौतिक सम्पदा तथा अध्यात्मिक सम्पदा तथा भविष्य में २१ जन्मों की बादशाही प्राप्त करता है। □

# मेरा अलौकिक अनुभव

(ले० ब्र० कु० ओमप्रकाश, सिरसा)

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय से सम्बन्ध में आने से पहले भक्ति पूजा, पाठ व्रत, नेम कर्म-काण्ड आदि किए परन्तु सच्ची स्वतन्त्रता और सन्तुष्टता के लिए मेरी इच्छा सदा बनी रहती थी। विद्यालय में आकर आत्मा-परमात्मा का परिचय, चारों युगों, तीन लोकों और ८४ जन्मों की अद्भुत कहानी को सुनकर मुझे ऐसे लगा कि अब मैं अपनी मंज़िल तक पहुँच जाऊँगा, मेरा अंग-अंग खिल गया, मैं खुशी से फूला न समाता था, अब मुझे आन्तरिक खुशी और शान्ति अनुभव होने लगी।

अव्यक्त बाप-दादा से मिलन कुछ समय पश्चात् मुझे महान अरावली पर्वत की उच्च शिखाओं में जड़ यादगारों से घिरे हुए विश्व आकर्षक चैतन्य मन्दिर मीठे-मीठे मधुवन (पाण्डव भवन, आबू) में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब मैं अव्यक्त बाप-दादा से मिला तो बाबा ने अति स्नेह से मीठे बच्चे पुकारते हुए कहा—"मीठे, बच्चे किससे मिलने आये हो? कहाँ आये हो? क्यों आये हो? किससे मिल रहे हो? कितने समय बाद मिल रहे हो? आदि प्रश्नों की लाईन लगा दी जिसका उत्तर मैं प्रेम के आँसुओं में दे रहा था। उस समय मैं भूल गया था कि मैं कौन-सी गाड़ी से और कहाँ से आया हूँ। बस बाप और मैं दोनों की याद थी तब बाबा ने धीरे-धीरे गम्भीरता से मधुर बोल से सम्बोधित करते हुए कहा—"बाप के नूरे लाल, जिसको बहुत काल से ढूढ रहे थे वो मिल गया ना। आपकी पुकार ने बाप को ब्रह्म-लोक से खींच लिया—सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो गई ना, बाप भी बच्चों के प्यार में बँधा हुआ है इसलिए उसे परमधाम छोड़कर आना पड़ता है, सदा प्यार का सबूत देते रहना।" यह कह कर बाबा ने मुझे टोली खिलाई। वह दिन मेरे चौरासी जन्मों के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण व गौरवशाली दिन था।

एक बार की बात है कि मैं शहर से दूर शान्त वातावरण में एकान्त स्थान पर पैदल जा रहा था और बाबा से अपने अज्ञान काल के जीवन की बातें कर रहा था—कि बाबा आपने मुझे पहले क्यों नहीं अपना बनाया। मैंने काफी समय लड़ाई-झगड़े और खेल-कूद, खान-पान में व्यर्थ गवाँ दिया। उस बिछड़ेपन को याद करके आँसू आ रहे थे, इतने में क्या देखा कि बाबा मुझे अपनी बाँहों में लिए हुए हैं, प्यार से निहार कर कह रहे हैं "मीठे बच्चे, सुबह का भूला शाम को घर वापिस आ जाए तो वो भूला नहीं कहलाता। अब तो आप बाप की गोद में आ गये हो, अब क्यों रोते हो। सदा बाप की श्रीमत पर चलते रहो।" इस प्रकार बाबा मुझे अभी भी अलौकिक अनुभूतियाँ करवाते रहते हैं।

इस महाविकारी और भ्रष्टाचारी दुनिया में भी अब मुझे बिल्कुल दुःख की भासना नहीं आती। अपने आप ही मुझे शक्ति मिलती रहती है। मुझे किसी को आधार बनाने की आवश्यकता नहीं। अब मैं रूहानी मस्ती में मस्त रहता हूँ, अब मेरा हाथ और साथ बाबा के साथ है। मेरे जीवन का यही लक्ष्य है कि मैं बाप समान बन औरों को भी आप समान बनाकर बाप समान बनाऊँ और नई दुनिया के निर्माण में जो बाबा ने मुझे जिम्मेवारी दी है उसको पूर्ण रीति से निभा सकूँ।

# नीरा की मनोदशा

ले०—ब० कु० विमला, आगरा

चारों ओर 'रक्षा-बन्धन' की खुशी में सभी के चेहरे खिल उठे हैं। बहिनें भाइयों की कलाई में राखी बांधती हर्षाती खुशी के गीत गा रही हैं। भाई भी अपने हाथ में सुशोभित अद्भुत शृंगार राखी को देख-देख रोमान्चित हो रहे हैं। किन्तु अपने भाग्य को कोसती हुई नीरा दिवंगत भाई की याद में आंसू बहा रही है। सभी को राखी बांधते देख नीरा का हृदय-विदीर्ण हो रहा है। रोती हुई नीरा को देख उसकी मां यशोदा सान्त्वना देते कलेजे से लगाकर समझाती है।

## (प्रथम दृश्य)

**यशोदा** (माँ)—बेटी नीरा ! तुम क्यों रो रही हो ? नीरा, बोलो बेटी !

**नीरा**—(वेदना भरे शब्दों में) माँ ! माँ मुझ जैसी अभागिन संसार में कोई और है क्या ? भैय्या, अनिल की जब यादें आती हैं तो दिल कहता है पृथ्वी फट जाय और मैं उसमें समा जाऊँ। ऐ निष्ठुर गगन ! तू भी मौन है। आज राखी का दिन है, माँ ! तू ही बता मैं किसके हाथ में राखी बाँधूं ?

**यशोदा**—(आँखों में आँसू पीती हुई) मत रो बेटी ! मत रो, बीती बातों को फिर से याद मत दिलाओ। कलेजा फटा जाता है, विधाता को भी रहम नहीं आया।

**नीरा**—(फूट-फूटकर रोती हुई व्याकुलता से) माँ ! भैया, भैया, भैया !

[अतीत की यादों में खोई नीरा चीत्कार-सी करती बेहोश हो जाती है]

## (द्वितीय दृश्य)

(प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में तीन मास से नियमित विद्यार्थी लता का प्रवेश)

**लता**—माता जी ! ओम शान्ति ! नीरा क्यों लेटी हुई है ? तबीयत ठीक नहीं है क्या ?

**यशोदा**—(आँखों में आँसू भरते) बेटी ! इसे आज अपने भैय्या की बहुत याद सता रही है।

**लता**—माता जी ! इसे बिठाओ तो, (खुद ही उसे बिठा लेती है) देखो मैं आपको बताती हूँ ! आज ब्रह्माकुमारी बहनों ने बताया कि परमपिता परमात्मा शिव ही हम सब आत्माओं का परमपिता, परम-शिक्षक, परम सद्गुरु व सच्चा सर्व सम्बन्धी है। जिस प्रकार कृष्ण की भक्ति में मीरा तल्लीन रहती थी उसने उसे ही अपना सब-कुछ माना था। तो उसे श्रीकृष्ण से ही सारे सम्बन्धों का रस मिलता था। ठीक उसी प्रकार हमें भी सर्वगुणों व शक्तियों के सिन्धु परमपिता को ही अपना सब-कुछ समझते उन्हीं की यादों में समाये रहने से ही परम आनन्द की अनुभूति होगी।

**यशोदा**—बेटी लता ! ज्ञान की इन रमणीक बातों को बताकर तुम इसे (नीरा को) धीरज दो।

(सामने अलमारी में रखी कृष्ण की मूर्ति के सामने लता, नीरा का हाथ पकड़कर ले जाती है।)

**लता**—नीरा, यह लो राखी और कृष्ण कन्हैया के हाथ में बाँधो। आज से इन्हीं को अपना सच्चा भैया समझना।

**यशोदा**—(प्यार से प्रोत्साहित करते) बाँधो बेटी, राखी कन्हैया के हाथ में, देखो, पीताम्बर धारी, तिलक मुकुट धारी तुम्हारा भैया कितना सलोना है ?

(नीरा माँ के आग्रह पर कृष्ण की मूर्ति के हाथों में राखी बाँध देती है।)

**लता**—मैं आप दोनों को एक खुशखबरी सुनाती

हूँ ! आज शाम को छः बजे हमारे घर ब्रह्माकुमारी बहनें राखी का गुह्य राज़ समझायेंगी तथा तुम्हारे भैया कृष्ण की जन्माष्टमी का भी वास्तविक अर्थ बतायेंगी, सभी पड़ोसी इकट्ठे होंगे। तुम दोनों भी अवश्य आना। (लता का प्रस्थान)

## (तृतीय दृश्य)

(नीरा मन-ही-मन विचार करती है कि कृष्ण मेरा भैया कैसे हो सकता है।)

**नीरा**—माँ ! कृष्ण को तो देवकी का आठवाँ पुत्र माना जाता है। कहा जाता है कि उसका जन्म कंस की जेल में हुआ था, जिसकी यादगार में हम आज से आठ दिन बाद 'कृष्ण-जन्माष्टमी' का त्यौहार मनायेंगे। फिर आप ही बताओ वह आपका बच्चा बनकर मेरा भैया कैसे बन सकता है ?

**यशोदा**—बेटी ! कृष्ण तो भगवान हैं, वह तो सब-कुछ कर सकते हैं।

**नीरा**—(तर्क देते हुए) माँ, परमात्मा को तो अजन्मा, अभोक्ता कहा जाता है। परमपिता, जिसका कोई माता-पिता न हो, फिर देवकी का बेटा कृष्ण परमात्मा कैसे हो सकता है ?

**यशोदा**—(सोच में पड़कर) बेटी इन ज्ञान की बातों में प्रवीण ज्ञान की विभिन्न बातें सुनाने वाली ब्रह्माकुमारी बहनों से शाम को पूछ लेना। हम तो ऐसा सुनते आये हैं इसलिए मानते चल रहे हैं।

## (चतुर्थ दृश्य)

(लता का घर। पड़ोसियों का जमाव, जहाँ ब्रह्माकुमारी बहनें राखी व कृष्ण जन्माष्टमी का रहस्य स्पष्ट करती हुईं।)

**ब्रह्माकुमारी**—आज हर व्यक्ति का चेहरा खुशी में खिल रहा है किन्तु इस खुशी को अविनाशी बनाने के लिए रक्षाबन्धन के रहस्य को हमें समझ लेना अति आवश्यक है। आप सभी समझते हैं कि बहिन द्वारा कलाई में राखी बाँधने, मस्तक पर टीका लगाने व मुख मीठा कराने से ही भाई-बहिन की रक्षा करने को बाध्य हो जाता है अथवा भाई द्वारा कुछ खर्ची आदि बहिन को देने से वह बहिन से उऋण हो जाता हो ! यह यथार्थ बात को नहीं सिद्ध करता है, वास्तव में इसका अर्थ भिन्न है।

(सभा मध्य एक विद्वान पंडित खड़ा होकर)

**पंडित**—(हाथ जोड़कर) देवी जी ! आज तक मैंने अनेक शास्त्र पढ़ डाले हैं किन्तु आज तक रक्षा-बन्धन के वास्तविक रहस्य से अनभिज्ञ हूँ, अति कृपा होगी यदि इसका गुह्य रहस्य आप स्पष्ट कर दें।

**ब्रह्माकुमारी**—हम सभी यह तो समझते हैं कि हम सभी इस शरीर से भिन्न चैतन्य आत्मायें एक पिता परमात्मा निराकार शिव की अविनाशी सन्तान आत्मिक नाते से भाई-भाई हैं तथा साकार सृष्टि में प्रजापिता ब्रह्मा की मुख वंशावली सन्तान होने के नाते परस्पर भाई-बहिन हैं ! किन्तु व्यवहार में आज मनुष्य स्वयं को आत्मा न समझकर देह अनुभव करता है, जिसके फलस्वरूप काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार उसकी पवित्रता सुख-शान्ति की सम्पत्ति को समाप्त कर चुके हैं ! दुःखी व अशान्त प्राणी सुख-शान्ति के सागर पिता परमात्मा से मिलना चाहता है। वर्तमान धर्मग्लानि के समय सत्धर्म स्थापनार्थ परमपिता परमात्मा निराकार शिव ब्रह्मा तन में अवतरित होकर हमें 'पवित्र बनो, योगी बनो' के दिव्य सन्देश देकर पवित्रता की प्रतिज्ञा की सूचक राखी बाँधते हैं। वास्तव में पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है। पवित्र जीवन बिताने के लिए हमें जंगल में जाने की आवश्यकता नहीं है। कार्यव्यवहार करते उसी ही परिवार, समाज में रहते, स्वयं को भृकुटि के बीच स्थित इस नश्वर शरीर का मालिक चैतन्य आत्मा अनुभव करने से तथा दूसरों को भी आत्मिक दृष्टि से भाई-भाई अनुभव करते पवित्रता के सागर परमपिता से बुद्धि-योग लगाने से पवित्रता की जीवन में सहज-धारणा हो जाती है। इसी की यादगार में आज मस्तक पर टीका लगाया जाता है। मुख मीठा करने का भाव है आत्मा स्वयं को गुणों व शक्तियों रूपी ईश्वरीय विरासत से तृप्त अनुभव करती है तथा दूसरों को भी अनुभव कराती है इस प्रकार दूसरों के प्रति भी मन, वाणी कर्म से सुख-दायी बन जाती है।

(सभी खुशी से ताली बजाते हैं; नीरा खड़ी हो जाती है।)

**नीरा**—बहिन जी ! जैसा कि आपके विचारों से मैंने समझा कि संसार के सभी सम्बन्ध विनाशी हैं। सच्चा सम्बन्धी कहें व व्यक्ति का सर्वस्व तो एक पिता परमात्मा ही है। क्या यह हो सकता है कि मैं परमात्मा को ही अपना सच्चा भैया मानकर उनकी याद में ही अपनी रक्षा अनुभव करूँ ?

**ब्रह्माकुमारी**—यह तो हम सभी जानते हैं कि हम इस संसार में शरीर रूपी वस्त्र पहनकर खेल-खेलने वाली चैतन्य आत्मायें हैं। इस खेल के अन्तर्गत कोई किसी का भाई बनता तो कोई किसी का पुत्र आदि। किन्तु समय चक्र के अनुसार वह आत्मा शरीर छोड़ उस सम्बन्ध से स्वयं अलग हो जाती है। तो स्पष्ट है जितने साँसारिक सम्बन्ध हैं वह विनाशी हैं। एक पिता परमात्मा ही हमारा सच्चा सम्बन्धी है तभी तो गाते हैं—त्वमेव माताश्च पिता...।

**नीरा**—बहिन जी ! मैं नहीं मानती कि देवकी के आठवें गर्भ से पैदा होने वाला कृष्ण परमात्मा है। आप बताइये क्या कृष्ण भगवान हैं ?

**ब्रह्माकुमारी**—परमपिता परमात्मा कहा ही जाता है जिसका कोई माता-पिता न हो अर्थात् जो जन्म-मरण से न्यारा है अभोक्ता है, अकाल-मूर्त है, वह तो परकाया प्रवेश कर प्रकृति को आधीन कर आता है किन्तु कृष्ण तो सतयुग का प्रथम राजकुमार है उसका तो राज-घराने में पालन-पोषण होता है। रक्षा-बन्धन का रहस्य तो बताया। अभी रात्रि के दस बजे हैं। आप कल अथवा कृष्ण जन्माष्टमी के दिन अवश्य ही हमारे सेवा केन्द्र पर आना। हम आपको कृष्ण के चौरासी जन्मों की कहानी बतायेंगी तथा स्पष्ट करेंगी कि कृष्ण भगवान नहीं हैं।

# राखी का संदेश

ब्र० कु० शशि, आबू

भैया मेरे, राखी की लाज बचाना।
पवित्रता अपनाना·····
भैया मेरे राखी की·····।
सुख-शान्ति का खजाना लाया
ब्रह्मा तन में शिव पिता आया
जन-जन को समझाना·····भैया मेरे·····
शिव रचने आये दैवी सृष्टि, बना रहे हैं पावन दृष्टि,
पवित्र वृत्ति बनाना·····भैया मेरे·····
शिव बाबा की अमृत वाणी, पतित पावनी और वरदानी
वाणी को अमल में लाना·····भैया मेरे ·····
आत्म स्मृति का तिलक लगा लो, दृढ़ता की राखी बंधवा लो,
वाणी से अमृत बरसाना·····भैया मेरे·····
माया को तुम दूर भगाना, राजयोगी जीवन अपनाना
मरजीवा बन जाना·····भैया मेरे राखी·····
अपवित्रता जीवन में समाई, दुःख-अशान्ति जग में छायी
खुशी का ख़जाना लुटाना, भैया मेरे राखी·····

# यू० एन० ओ० में ब्रह्माकुमार निर्वैर जी का स्वागत

**न्यूयार्क**—यू० एन० ओ० ऑफिस से प्राप्त समाचार के अनुसार ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के ऑफिसर इन्चार्ज ब्रह्माकुमार निर्वैर जी का निःशस्त्रीकरण शान्ति सम्मेलन में भाग लेने हेतु अमेरिका पहुँचने पर हवाई अड्डे पर भव्य स्वागत किया गया। वहाँ से सीधा ही यू० एन० ओ० बिल्डिंग में गये जहाँ यू० एन० ओ० द्वारा विशेष स्वागत का आयोजन किया गया था। स्वागत हाल के द्वार पर यू० एन० ओ० के सेक्रेट्री जनरल भ्राता हावियर पेरेज कुइलार तथा तीन असिस्टेंट सेक्रेट्री जनरल स्वागत के लिए खड़े थे। सेक्रेट्री जनरल ने बड़े प्रेम से हाथ मिलाते स्वागत किया। बाद में भ्राता निर्वैर जी ने भारतीय सभ्यता अनुसार गले मिलते सर्व भारतवासियों की ओर से निःशस्त्रीकरण शान्ति सम्मेलन की सफलता के लिए शुभ कामनायें दीं। साथ-साथ ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिकायें दादी जी एवं दीदी जी का शुभ सन्देश तथा शुभ कामनायें सुनाईं।

उसी समय उपस्थित यू० एन० ओ०, एन० जी० ओ० की डी०पी० आई० की चीफ शैली स्विग शैली, भारत के यू० एन० ओ० में एम्बेसडर भ्राता कृष्णन, यू० एन० ओ० निःशस्त्रीकरण कमेटी के प्रेज़ीडैन्ट डा० हेमरजाक, यू० एन० ओ० के पीस प्रोग्राम इन्चार्ज तथा १५० से अधिक भिन्न-भिन्न देशों से आये हुए विभिन्न वर्गों के विशेष अतिथियों ने भी स्नेह पूर्वक स्वागत किया। सभी को भ्राता निर्वैर जी ने, १९८३ फरवरी में आबू पर्वत पर होने वाली यूनीवर्सल पीस कानफ्रेन्स का हार्दिक निमन्त्रण दिया। ▭

## समस्त उलझनों का हल

समस्त कठिनाइयों, व्यथाओं और वेदनाओं का एक ही कारण है और उनके निवारण का उपाय भी एक ही है। काँटा चुभना दर्द का कारण है, तो उसे निकाल देना ही दर्द से छुटकारा पाने का उपाय है। इस प्रकार मनोवृत्तियों का विकारी हो जाना ही समस्त उलझनों का कारण है। संसार में तब तक शान्ति नहीं हो सकती जब तक मनुष्य का अन्तःकरण परमात्मा की ओर न झुके और सात्विकता तथा धार्मिकता को न अपनाये।

इस समय जितनी भी कठिनाइयां हैं वे सभी अनैतिकता के कारण हैं। अभी मनोविकार, विश्वास-घात, वचन-भंग, द्वेष, अहंकार और कर्तव्य-त्याग की बुराइयाँ आदि बेतहाशा बढ़ रही हैं। सरकार, कर्मचारी, व्यापारी, धर्म-प्रचारक, नेता, मज़दूर सभी वर्गों में इस प्रकार दूषित मनोवृत्ति बढ़ रही है कि पानी का बदला खून से और खून का बदला जान से लिया जा रहा है। अविश्वास, असन्तोष, आशंका से हरएक का मन भारी हो रहा है।

इस स्थिति को कानून, पुलिस, फौज या सरकार नहीं बदल सकती है। जब ईश्वरीय ज्ञान द्वारा आत्मा जागृत होकर स्वयं में धर्म-भावना, कर्तव्य-निष्ठा, ईमानदारी, त्याग, प्रेम और सच्ची सेवा की भावना पैदा करेगी, तभी अनैतिकता की और दुःख की स्थिति का अन्त होगा। ▭

# प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

आज जब मैं बाबा के पास गई तो वतन का दृश्य बड़ा ही सुन्दर दिल को कशिश करने वाला था। ऐसे लग रहा था कि आज यह रस भरा वायुमण्डल हमारा स्वागत कर रहा है। बस चारों ओर से शान्ति, शक्ति और खुशी यह तीनों अनुभव हो रहे थे। बस एक तरफ यह दिल को कशिश करने वाला दिलकश वायुमण्डल, दूसरे तरफ हमारे मीठे-मीठे प्यारे बाप-दादा के मीठे बोल—"आओ बच्ची, आओ बच्ची" —यह साज़ कानों में गूंज रहे थे। इस श्रेष्ठ संगीत ने तो मन को मोहित कर लिया और खुशी में झूमते, उड़ते बाप के विशाल हृदय तख्त में समा गई। लेकिन आज मैं अकेली नहीं थी मेरे साथ और भी सर्व बाबुल के स्नेही बच्चे साथ थे। और सबको बाबा मीठी-मीठी नजर से निहाल कर स्नेह, स्वमान के बोल से स्वागत कर रहे थे। वह गोल्डन वर्शन्स क्या थे ? -- "ओ मेरे दिल के दिलरूबा बच्चे", "ओ मेरे मन के माणिक, मालिक बच्चे", ऐसे बोल सुनते सब रूहानी नशे में लवलीन हो, नयनों से रेसपान्ड भी कर रहे थे लेकिन नदी सागर के मेले में मगन भी थे। सच तो वह गोल्डन घड़ियाँ तो अनुभव करने की ही हैं, वर्णन क्या कर सकते। हर एक अनुभवों के सागर में समा गये।

कुछ समय बाद बापदादा बोले—"बच्ची, आज क्या खबर लाई हो ? तुम्हारी पुरानी दुनिया का क्या हालचाल है ?" मैं मुस्कराई और बोली—"बाबा, आजकल तो चारों ओर दुख और उदासी का ही वातावरण दिखाई देता है।" बाबा बोले—"बच्ची, ऐसे संसार की हालत को देखते विश्व के मालिक बच्चे क्या कर रहे हो ? क्या विश्व परिवर्तन करने के लिए दिन रात उसी चिन्तन में बिजी रहते हो ?" ऐसे कहते दुख हर्ता सुख कर्ता बाप जैसे विश्व के बच्चों को ही देख रहे थे और बोले—"बच्ची, जानती हो कि आज-कल की दुखमय हालत प्रमाण हर आत्मा के मन में क्या संकल्प है वा मुख में क्या बोल हैं ? जैसे आप लोग कोई भी विशेष कार्य करते हो तो उसी कार्य का सिम्बल बनाते हो और कार्य का विशेष नाम रखते हो—वैसे आजकल के संसार के हर मनुष्य, हर वर्ग का सिम्बल और उसका बोल जानते हो क्या है ? वह दृश्य दिखाता हूँ।" बस, ऐसे कहते ही दृश्य सामने क्या दिखाया कि हरेक वर्ग का, हर आयु का मनुष्य—जैसे छोटा बच्चा, युवा, बूढ़ा फिर बिजनेस मैन, नौकरी वाले, हर धन्धे वाले सब थे। सबके चेहरे के चिन्ह जैसे "क्या" के सोच वाले थे और हाथ भी ऐसे ही पोज़ में था। जैसे बात कहते वा सोचते हैं—क्या हुआ क्या होगा तो हाथ का पोज कैसा हो जाता है। वह तो आप स्वयं अनुभव से सोच लो। मैं आर्टिस्ट तो हूँ नहीं जो चित्र बनाकर दिखाऊँ। लेकिन सबके हाथ की रेखा—ऐसे (क्या वाली) थी। और हाथ के ऊपर बड़े शब्दों में लिखा था—"क्या होगा ?" और हरेक के हाथ के नीचे, क्या होगा की लम्बी लिस्ट थी —जो दो चार मिसाल मैं सुना रही हूँ—जैसे छोटा बच्चा था—तो उसके हाथ के नीचे लिखत थी—इम्तिहान में पास न हुआ तो क्या होगा ? वा इम्ति-हान की रिजल्ट क्या होगी ? अगर माँ बाप ने डाँटा तो क्या होगा ? दोस्त रूठा (नाराज़ हुआ) तो क्या होगा ? ऐसे युवा वर्ग वालों के हाथ के नीचे लिखत थी—जीवन का भविष्य क्या होगा ? जीवन साथी योग्य न मिला तो क्या होगा ? माँ बाप से न बनी तो क्या होगा ?

बुढ़े के हाथ के नीचे लिखत थी—बच्चे साथ न देंगे तो क्या होगा ? डाक्टर, बीमारी बढ़ती जा रही है, रात की नींद भी मुश्किल है और आगे क्या होगा ?

साइंस वाले—शस्त्र यूज करें तो भी क्या होगा, न करें तो भी क्या होगा ?

बिजनेसमैन—आज तो कैसे भी कमा लिया, कल पकड़े गये तो क्या होगा ? इन्कमटैक्स लग गया तो क्या होगा ?

ऐसे हर वर्ग, हर आयु वाले के नीचे बड़ी लम्बी लिस्ट और बड़ी रूची वाली बातें थीं। लेकिन मैंने तो शार्ट में सुनाया है। ऐसे देखते-देखते यह दृश्य भी समाप्त हो गया। और बाबा बोले—"बच्ची, देखा आजकल का विशेष सिम्बल और बोल क्या है? क्योंकि आज बिना लक्ष्य, बिना लक्षण धक्के से जो हैं, जैसे हैं चलना है, चलाना है, यहीं जीवन है। लेकिन तुम लक्ष्यवान श्रेष्ठ आत्माओं का सिम्बल और स्वरूप क्या है?"

वह भी दृश्य दिखाया कि कैसे चारों ओर की हलचल के बीच अचल अडोल स्थिति की स्मृति के समर्थ आसन पर स्थित हैं और वरदान के चिन्ह का हाथ है। जैसे देवियों का हाथ दिखाते हैं। और संकल्प वा बोल लिखा हुआ था—"जो होगा कल्याणकारी होगा। जो होगा कल्प पहले मुआफिक होगा। सब अच्छे ते अच्छा होगा।"

ऐसे दोनों दृश्य दिखाकर बाबा बोले—"देखा, तुम विश्व के मालिक सो विश्व पिता के बालक आत्माओं की सदा ऐसी स्थिति है? इस स्थिति द्वारा ही मास्टर दुखहर्ता सुखकर्ता का पार्ट बजा सकेंगे। इसलिए सब बच्चों को याद प्यार के साथ यही सन्देश देना कि—**"सदा हर आत्मा को शक्तियों द्वारा साहस और खुशी का सहारा देते रहो। ओ सहारा देने वाले मास्टर मीठे बच्चे, अब दिन रात इस बेहद की सेवा में जुट जाओ, लग जाओ। सुखधाम का रास्ता बताते जाओ। सुखदाता से मिलाते जाओ।"** ऐसे कहते बाबा ने मिलन मनाते साकार दुनिया में भेज दिया। □

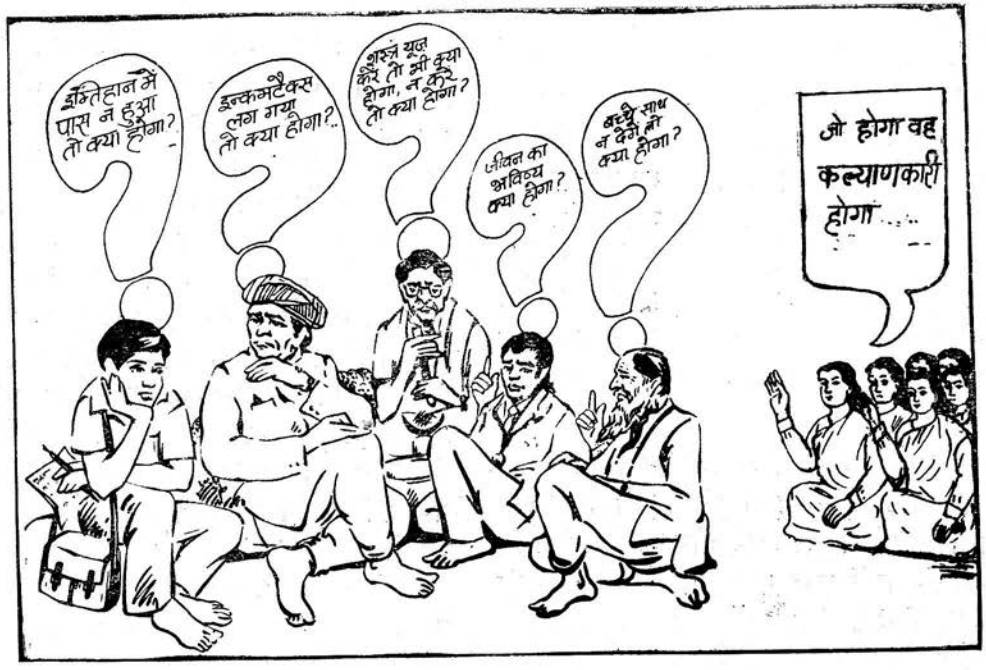

←सम्बलपुर (उड़ीसा) में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ब्र० कु० पार्वती जी गायत्री शक्ति पिथा के प्रमुख डा० संन्यासी सेठ को चित्रों की व्याख्या कर रही हैं।

गडिगंलहज के म्यूनिसिपल हॉल में→ एक आध्यात्मिक प्रोग्राम का आयोजन किया गया। चित्र में भ्राता रन्तपा कुमार उद्घाटक के रूप में अपना विचार सुना रहे हैं, उनके साथ ब्र० कु० महादेव, ब्र० कु० ऊषा व रमा बहन बैठी हैं।

←बोकारो सेण्टर की तरफ से चास में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन वल्लभ भाई पटेल (चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स उपाध्यक्ष) जी ने दीपक जलाकर किया। पास में ब्र० कु० कुसुम, सुमन व अंजू जी खड़ी हैं।

# अनमोल बातें

ब्र० कु० सन्तोष, सतना

(१) १. जैसी स्मृति वैसा संस्कार
२. जैसी वृत्ति वैसा स्वभाव
३. जैसा अन्न वैसा मन
४. जैसा पानी वैसी वाणी
५. जैसा कुल वैसा कर्म
६. जैसा चित्र वैसा चरित्र
७. जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण
८. जैसी कृति कर्म वैसी प्राप्ति
९. जितना स्वमान उतना निर्माण
१०. जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

## तीन मुख्य बातें

(I) किन तीन की सदा स्मृति रखें ?
१. स्वयं की २. बाप की ३. सृष्टि ड्रामा की

(II) पुरुषार्थ में कौन-सी तीन बातों पर ध्यान देना है ?
१. शिव बाबा का आदेश २. स्वदेश ३. जीवन का उद्देश्य

(III) बाबा के तीन मुख्य वरदान
१. निराकारी भव २. निर्विकारी भव ३. निरअहंकारी भव

(IV) तीन मुख्य धामों की बुद्धि से यात्रा करें !
१. सुखधाम २. शान्तिधाम ३. ईश्वरीय धाम अथवा संगमयुग

(V) तीन मुख्य कर्त्तव्य करने हैं।
(१) दैवी गुणों की स्थापना।
(२) विश्व कल्याणकारी बनकर सर्व आत्माओं की अलौकिक पालना।
(३) आसुरी शूद्रपन के स्वभाव संस्कारों का विनाश।

(VI) तीन को मुख्य धारण करना है—
(१)शुद्ध आहार(२)शुद्ध व्यवहार(३)शुद्ध विचार।

(VII) संगमयुग में तीन पिता मिलते हैं।
(१) लौकिक पिता (२) अलौकिक पिता (३) पारलौकिक पिता।

(VIII) तीन पिता से तीन तरह की प्राप्तियाँ होती हैं।
(१) लौकिक पिता से चित्र (शरीर)
(२) अलौकिक पिता से चरित्र
(३) पारलौकिक पिता से विचित्र

(IX) सतयुगी दुनिया की मुख्य तीन विशेषताएँ हैं
(१) एक धर्म (२) एक राज्य (३) एक कुल।

(X) तीन मुख्य सर्टिफिकेट प्राप्त करने हैं।
(१) मन पसन्द (२) प्रभु पसन्द (३) लोक पसन्द।

गुजरात राज्य के कृषि मन्त्री भ्राता विजय दास जी गांधी नगर सेवा केन्द्र पर पधारे। शिव बाबा को भोग लगाया जा रहा है।

# रक्षा-बन्धन पर्व पवित्रता की प्रतिज्ञा का सूचक

ब्र० कु० अवतार, माउण्ट आबू

भारत एक आध्यात्म प्रधान देश है। इस देश में कोई भी दिन ऐसा नहीं, जो किसी त्यौहार के बिना हो। सभी त्यौहारों में से रक्षा-बन्धन को तो विशेष ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कुछ प्राचीन प्रथाओं के अनुसार इस विशेष पुनीत अवसर पर कहते हैं—बहिन, भाई को स्वयं की रक्षा हेतु राखी के सूत्र में बांधकर प्रतिज्ञाबद्ध कराती है। तथा इस विषय में पौराणिक साहित्य में नाना प्रकार की कथायें प्रचलित हैं, किन्तु मूलतः उपरोक्त विषय को लेकर ही इसे मनाया जाता है।

अब इस विषय में तनिक-सा विचार किया जाय तो हम देखेंगे कि वास्तव में रक्षा के लिए सदा-सर्वदा उसी से अनुनय-विनय किया जाता है कि जो रक्षा करने में समर्थ हो किन्तु प्रायः यह देखा गया है कि भाई तो न केवल शारीरिक दृष्टिकोण से ही अपितु आर्थिक-दृष्टिकोण से भी बहिन की रक्षा करने में असमर्थ हो सकता है, तब भला यह प्रथा-प्रचलन कैसे ? और आज यह देखा गया है कि कई बहनें तो भाई की अपेक्षा कहीं अधिक हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ तथा साहसी क्षमतायुक्त एवं चतुर होती हैं। इतिहास भी सहस्त्रों महिलाओं की वीर-गाथाओं से भरा पड़ा है, जैसे कि रानी पद्मिनी का अद्भुत जौहर, महारानी लक्ष्मी बाई की अचरजमयी शूरवीरता आदि। तब भला इस प्रथा का रहस्य क्या ?

यह हम पहले ही बता आये हैं कि भारत एक आध्यात्म प्रधान देश है, तब इस देश के त्यौहार भी किसी न किसी आध्यात्मिक पृष्ठ भूमिका को लिए होने चाहिए, ऐसा माना जाता है। क्योंकि कंस भी तो देवकी का भाई ही था तो क्या देवकी ने कभी कंस को राखी नहीं बांधी होगी ? जबकि वह आर्य ग्रन्थों के अनुसार सनातन धर्म के अनुगामी थे। दूसरी तरफ छत्रपति शिवाजी ने गौहरबानू के साथ जो नाता निभाया वह तो सभी जानते ही हैं। यद्यपि गौहरबानू ने कभी भी शिवाजी को राखी नहीं बांधी थी क्योंकि वे इस्लाम मज़हब का अनुकरण करती थी। खैर, कुछ भी हो, यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि यह कोई आवश्यक नहीं कि राखी बाँधने से ही बहिन की रक्षा की जा सकती है अपितु वृत्ति बदल जाने पर भाई ही बहिन के लिए यमदूत बन सकता है और यदि उन्हीं विचारों में प्रेम-सरिता बहने लगे तो कोई भी बहिन की आन पर न्यौछावर हो सकता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि राखी वास्तव में पवित्रता की बोधक है जो कि एक स्थूल उदाहरण देकर सिद्ध किया गया है। वास्तव में रक्षा-बन्धन पर्व पवित्रता की प्रतिज्ञा का सूचक है क्योंकि जब मनुष्य में नाना प्रकार के दैहिक आकर्षण विकसित हो जाते हैं अथवा जब माया जनित विकार मानवता को हर लेते हैं तब उसमें देह अभिमान के फलस्वरूप स्वार्थ वृत्ति के संकुचित एवं हेय दृष्टि का बीजारोपण होता है। फलित होकर वे इन्हीं नीच दानवीय भावनाओं में उलझकर स्नेह, सहानुभूति, सहयोग जैसे मानवीय आदर्शों को तिलाञ्जलि देकर स्वार्थ वृत्ति को प्राथमिकता देता है। अतः इसलिए ही रक्षा-बन्धन भाई और बहिन के सच्चे स्नेह और पवित्र नाते को पुनः जागृत करने हेतु मनाया जाता है।

**रस्म जनेऊ की**—कुछ प्राचीन परम्पराओं के अनुसार ब्राह्मण भी यजमानों को राखी बांधते हैं तथा एक जनेऊ नाम का सूत्र भी पहनाते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पहले कभी अवश्य ही ब्राह्मण अथवा ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त अर्थात् जो लोग स्वयं पवित्र थे उन्होंने उन मनुष्यों से, जो कि मायामय विकारों के चंगुल में फंसे थे, उन्हीं को इस दुःखमय नर्क से विमुक्त कराने हेतु इस सूत्र को बांधकर प्रतिज्ञा कराई होगी। यही रक्षा-बन्धन का रहस्य है। ●

# जालन्धर में नव विश्व आध्यात्मिक मेला

जालन्धर में भगतसिंह पार्क में ७ से १५ जुलाई तक नव विश्व आध्यात्मिक मेला लगाया गया, जिसका उद्घाटन ज़िलाधीश भ्राता केसर जी ने किया। इस मेले को हज़ारों लोगों ने देखा। योग शिविर का भी आयोजन किया गया था। लगभग २०० आत्माओं ने योग शिविर किया, अब भी सेवा केन्द्र पर नए-२ भाई-बहन नियमित आध्यात्मिक लाभ उठा रहे हैं।

जालन्धर में नव विश्व आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन ज़िलाधीश भ्राता केसर जी कर रहे हैं। साथ में ब्र०कु० दादी चन्द्रमणि जी संजीवन जी, राज जी, शुक्ला जी, ज़िलाधीश महोदय की पत्नि तथा अन्य खड़े हैं।

बलसोर (उड़ीसा) में एक विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता बी० रावत, ए० डी० एम० ने टेप काटकर किया। पास में ब्र० कु० शीला व ब्र० कु० कमलेश जी खड़ी हैं।

घनैरा में प्रदर्शनी देखने के पश्चात् मदन कुमार जैन जी को ब्र० कु० गंगा बहन (मुरादाबाद) ईश्वरीय साहित्य भेंट कर रही हैं।

## सूचना

अभो तक भी कई सेवा केन्द्रों ने ज्ञानामृत तथा वर्ल्डरिन्युवल के सदस्यों की संख्या नहीं भेजी है। कृपया शीघ्र भेजें। यदि आप सदस्य बनाने के लिए फ़ार्म की कापी चाहें तो हम भेज सकते हैं।

# आध्यात्मिक सेवा समाचार

**काठमांडू :** (नेपाल) सेवा केन्द्र से शीला बहिन लिखती हैं कि यहां के 'याक और यति' होटल में 'विश्व हिन्दू सम्मेलन' तथा 'युनवर्सल सनातन धर्म फांउडेशन' की मीटिंग के अवसर पर आध्यात्मिक प्रवचन किए गए, जिनमें विदेशों से आए हुए प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

**बड़ौदा :** (गुजरात) सेवा केन्द्रों की ओर से गत मास पत्रकार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सभी प्रमुख समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों ने तथा अहमदाबाद-बड़ौदा आकाशवाणी के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उनको परमपिता के परिचय तथा विश्व विद्यालय की गतिविधियों से अवगत कराया गया।

**मेहसाना :** सेवा केन्द्र की ओर से गत मास डा० कान्ति भाई के निवास स्थान पर "मेडिटेशन एज मैडिशन" विषय पर प्रवचन का कार्यक्रम, "इंडियन मेडिकल एशोसिएशन मेहसाना" तथा ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संयुक्त सहयोग से आयोजित किया गया, जिसमें लगभग डाक्टर्स भाई-बहिनों ने भाग लिया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

**जगाधरी :** सेवा केन्द्र से ब्र० कु० कृष्णा लिखती हैं कि नारायण गढ़ में राधा स्वामी संस्था द्वारा आयोजित मानव एकता सम्मेलन में सर्व धर्मों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ हमें भी प्रवचन के लिए निमन्त्रण मिला। प्रवचन के द्वारा परमपिता के परिचय तथा विश्व में मानव एकता कैसे हो सकती हैं—विषय पर प्रकाश डाला गया।

**धर्मशाला :** सेवा केन्द्र से ४५ कि० मी० दूर नगरोटा सूरियां में १२ दिन के लिए ज्ञान-योग—धारणा शिविर का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती गांवों सुकनाड़ा, कथोली, खबल तथा भटोली-फकोरियां में प्रोजैक्टर शो द्वारा ईश्वरीय संदेश पहुंचाया गया।

**जेतपुर :** सेवा केन्द्र की ओर से जेतलसर: जेतपुर शहर, पीपलवा गाँव में प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविरों के आयोजन किए गए। सांकली गाँव में प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों से हजारों आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

**राजकोट :** सेवा केन्द्र की ओर से आटकोट तथा पडघरी नामक गांवों में तथा गोंडल गीता पाठशाला पर विश्व शांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। जिनसे अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त सरकारी, गैर-सरकारी कर्मचारियों का तथा जी० ई० बी० विभाग के इंजीनियर्स का अलग-अलग स्नेह मिलन रखा गया।

**रोहतक :** सेवा केन्द्र से ब्र० कु० रानी लिखती हैं कि आसपास के गाँवों में हर रविवार को प्रदर्शनी द्वारा ईश्वरीय संदेश पहुंचाया जाता है। अभी तक पाँच गाँवों में की गई प्रदर्शनियों से हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

**लुधियाना :** सेवा केन्द्र की ओर से अहमदगढ़ मंडी में विश्व-नव निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन म्यूनिसिपल कमेटी के प्रैजीडैंट भ्राता नव बहार जी ने किया। प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा। राजयोग शिविर से भी १२० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया, जिसके फलस्वरूप ४० आत्माएं साप्ताहिक कोर्स के बाद नित्य क्लास कर रहे हैं।

**पाटन :** सेवा केन्द्र की ओर से "मेडिटेशन एज मेडिशियन" विषय पर प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें 'इंडियन मेडिकल एशोसिएशन' के लगभग ४० प्रतिष्ठित डाक्टर्स ने भाग लिया। मुख्य प्रवक्ता डा० गिरिश भाई पटेल थे इसके अतिरिक्त कालेज के प्रोफेसर्स तथा प्रिंसिपलस का स्नेह मिलन

रखा गया, जिसमें ३५ आत्माओं ने भाग लिया।

**ब्यावर** : सेवा केन्द्र की ओर से एडवर्ड मिल, महालक्ष्मी मिल, कृष्णा मिल, वेस्ट काटन प्रैस, राजपुताना काटन प्रैस तथा राजस्थान सरकार के लेबर आफिस में औद्योगिक विश्व प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिनसे लगभग १५००० श्रमिकों, कर्मचारियों तथा अधिकारी वर्ग ने लाभ उठाया।

**छतरपुर** : सेवा केन्द्र से ब्र० कु० संध्या लिखती हैं कि हमीर पुर जिले में कुल पहाड़ उपसेवा केन्द्र पर तथा निकटवर्ती गाँव बेलाताल में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिनसे हजारों आत्माओं ने परमपिता का संदेश प्राप्त किया।

**संकेश्वर** : सेवा केन्द्र पर क्लास हाल का उद्घाटन समारोह भ्राता रत्नप्पा कुमार महाराष्ट्र शासक द्वारा सम्पन्न हुआ। इस समारोह में अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया तथा आध्यात्मिक प्रवचन के द्वारा हजारों आत्माओं को शिव बाबा का संदेश दिया गया।

**अकोला** : सेवा केन्द्र की ओर से निकटवर्ती डोण गाँव में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी, प्रवचन प्रोजैक्टर शो, साँस्कृतिक कार्यक्रम तथा राजयोग शिविर का आयोजन ८ दिन के लिए किया गया। जिससे ३००० आत्माओं ने लाभ उठाया, २०० आत्माओं ने राजयोग शिविर से लाभ उठाया।

**उदयपुर** : सेवा केन्द्र से शील बहिन लिखती हैं कि ककरोली शहर में जे० के० टायर फैक्ट्री में औद्योगिक शाँति प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन टायर फैक्ट्री के जनरल मैनेजर भ्राता एस० सी० सेठी ने किया। इसके अतिरिक्त ककरोली शहर के एक स्कूल में राजयोग प्रदर्शनी रखी गई। पांच दिन में इस प्रदर्शनी से अनेक आत्माएं लाभान्वित हुई।

**सतारा** : सेवा केन्द्र से नलिनी बहिन लिखती हैं कि जन-जन को ईश्वरीय संदेश देने हेतू पाडली, खडकी, मसूर, खटाव आदि गाँवों में प्रदर्शनी तथा प्रवचनों के कार्यक्रम रखे गए, जिनसे ५०००आत्माओं ने लाभ उठाया।

**जगन्नाथ पुरी** : सेवा केन्द्र की ओर से १० दिन के लिए विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन रथयात्रा के अवसर पर किया गया, जिसका उद्घाटन 'पुरी गजपति महाराजा दिव्य सिंह देव जी' ने किया। इस प्रदर्शनी से कई हजार आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

**अशोक विहार** : (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से गत मास में कालोनी के भिन्न-भिन्न ब्लाकों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा जन-जन को ईश्वरीय संदेश दिया गया।

**होन्नावर** : सेवा केन्द्र की ओर से वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता बहिन चिन्नम्मा थामस ने की। प्रवचन, मनोरंजन, नृत्य, गीत आदि सहित कार्यक्रम बहुत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम द्वारा अनेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश प्राप्त हुआ।

**पालमपुर** : (हिमाचल प्रदेश) सेवा केन्द्र से प्रेम बहिन लिखती हैं कि यहाँ पर विश्व शांति आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि हि० प्र० कृषि विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर भ्राता हैतराम कालिया जी थे। राजयोग फिल्म भी दिखाई गई। इसके अतिरिक्त तहसील मैदान में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई, जिससे कई सौ आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

**ऊंझा** : (गुजरात) सेवा केन्द्र द्वारा जन-जन को ईश्वरीय संदेश पहुंचाने हेतू निकटवर्ती गाँवों—देणय, बुटा, पालडी, जाश्का, टुडाव और ऊंझा में प्रदर्शनी, झाँकी, प्रवचन, प्रोजैक्टर शो और राजयोग-शिविरों का आयोजन किया गया, जिनसे लगभग ६००० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

**श्री गंगानगर** : सेवा केन्द्र की ओर से शहर में २० सूत्रीय कार्यक्रम मेले में विश्व नव निर्माण, चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका नाम था "गेट वे टू हैवन।" इस प्रदर्शनी से अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया। □

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, बी 9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70